अगस्त-2025 | वर्ष : 09 | अंक : 05 | मूल्य : ₹25/- मात्र

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

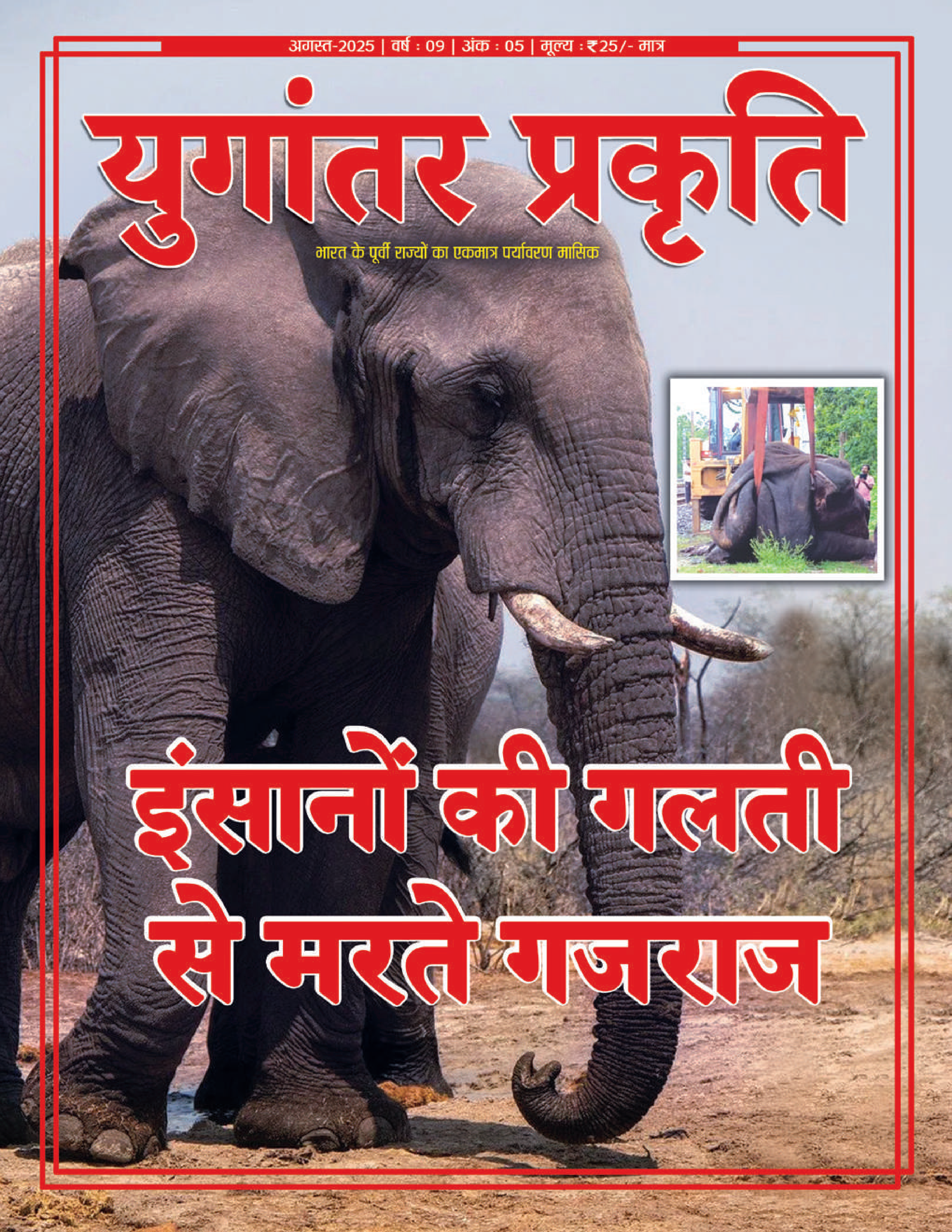

इंसानों की गलती से मरते गजराज

युगांतर प्रकृति

प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित मासिक पत्रिका

प्रकृति, पर्यावरण, सामाजिक उत्थान, क्षमता संवर्धन शोध एवं विकास तथा राष्ट्रीय गौरव के लिए समर्पित संस्था

सदस्यता शुल्क

1	वार्षिक	250/-
2	पंचवर्षीय	1,200/-
3	दस वर्षीय	2400/-
4	आजीवन	5,000/-

विज्ञापन दर

1	बैक पेज	1,00,000/-
2	इनसाइड कवर पेज	90,000/-
3	फुल पेज	75,000/-
4	हाफ पेज	50,000/-

भुगतान संबंधित निर्देश

भुगतान कृपया चेक/डीडी/आरटीजीएस द्वारा Nature Foundation के नाम से करें

Account Details

NATURE FOUNDATION

Account No. : 3611740792

Kotak Mahindra Bank

IFSC Code : KKBK0005631

विज्ञापन संबंधित निर्देश

कृपया अपना विज्ञापन पीडीएफ अथवा जेपीजी फॉर्मेट में yugantarprakriti@gmail.com ईमेल या डाक द्वारा युगांतर प्रकृति, सेंट्रल स्कूल के समीप, सिद्रोल, नामकुम, रांची-834010 के पते पर भेजें।

विशेष सहयोग

'युगांतर प्रकृति' का प्रकाशन नेचर फाउंडेशन के द्वारा किया जाता है, जो प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित एक गैर लाभकारी ट्रस्ट है। पत्रिका के सुगम प्रकाशन हेतु Nature Foundation के नाम चेक अथवा डीडी के माध्यम से यथासंभव आर्थिक सहयोग आमंत्रित है।

इस अंक में खास...

06 इंसानों की गलती से मरते गजराज

12 कवर स्टोरी-3

कोल्हान में इस साल एक दर्जन से ज्यादा हाथियों की मौत

कोल्हान प्रमंडल क्षेत्र में इस साल अब तक एक दर्जन से ज्यादा हाथियों की मौत हो चुकी है। इनमें नौ हाथियों की जान तो जून और जुलाई में ही गई है।

18 कवर स्टोरी-2

कोल्हान में सेफ नहीं गजराज

कोल्हान क्षेत्र में हाल के दिनों में हाथियों की हुई मौतों ने वन्य प्राणियों की सुरक्षा को लेकर किये जा रहे दावों की पोल खोलकर रख दी है।

21 कवर स्टोरी-4

चल चल चल मेरे साथी, मेरे हाथी...

24 स्पेशल स्टोरी

खामोश हो रही है वनराज की दहाड़

प्रकृति की भाषा मौन और गर्जना के बीच बहती है। प्रकृति का मौन कभी चिंतन होती है, कभी चेतावनी।

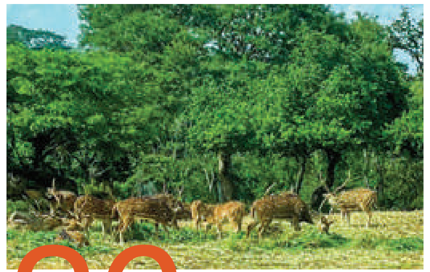

26 पर्यावरणीय पर्यटन

इंसान और वन्यजीव मिल कर रहते हैं बेनरघट्टा बायोलॉजिकल पार्क में

28 पर्यावरण

मधुमक्खियां पर्यावरण में अहम भूमिका निभाती हैं

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

वर्ष-9, अंक-05, अगस्त-2025, कुल पृष्ठ-36 (आवरण सहित)

मुख्य संरक्षक
सरयू राय

प्रधान संपादक
आनंद सिंह

संपादक
अंशुल शरण

संरक्षक मंडल
राजेन्द्र सिंह, एम.सी. मेहता, प्रो. आर. के. सिन्हा,
प्रो. एस. इ. हसनैन, डॉ. आर. एन. शरण,
डॉ. आर. के. सिंह

सलाहकार मंडल
डॉ. एम. के. जमुआर, डॉ. दिनेश कुमार मिश्र,
डॉ. के. के. शर्मा, डॉ. गोपाल शर्मा,
डॉ. ज्योति प्रकाश

डिजाइन आर्टिस्ट
अनवारूल हक

विधि परामर्शी
रवि शंकर (अधिवक्ता)

प्रबंधन
राजेश कुमार सिन्हा

संपादकीय कार्यालय
संपादकीय, सदस्यता एवं विज्ञापन
नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप
पो. नामकूम, सिदरौल, रांची, झारखंड, पिन-834010

कोलकाता कार्यालय
ग्राउंड फ्लोर, 131/24, रीजेंट पार्क गवर्नमेंट क्वार्टर,
कोलकाता, पिन-700040

पटना कार्यालय
201, दीपराज कॉम्प्लेक्स, आर्य कुमार रोड,
दिनकर गोलंबर, पटना 834004

स्वामी, मुद्रक और प्रकाशक **मधु** द्वारा झारखंड प्रिंटर्स प्रा. लि., 6A, गुरुनानक नगर, साकची, **जमशेदपुर** से मुद्रित व नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप पो. नामकूम, सिदरौल, **रांची**, झारखंड से प्रकाशित।
आरएनआई नंबरः JHAHIN/2016/68667
पोस्टल रजिस्ट्रेशन नंबरः RN/248/2016-18

ई-मेलः yugantarprakriti@gmail.com
मोबाइल 7307071539, 9304955301/2

■ अपनी बात

हाथियों की मौत

■ **अंशुल शरण**

प्रिय पाठकों,

हाथियों की मौत लगातार हो रही है। किसी एक प्रदेश की बात न करें। देश भर में हाथी मर रहे हैं। इनकी मौत आम आदमी को झकझोरती हैं। हाथी से इंसान का संबंध बेहद दोस्ताना रहा है। दोस्त के मरने पर कैसी पीड़ा होती है, इसका भान शायद आपको होगा!

18-19 जुलाई की दरमियानी रात दो छोटे हाथी और एक मादा हाथी की रेल से कट कर मौत हो गई। घटनास्थल पश्चिम बंगाल का झाड़ग्राम जिला रहा। कहा जा रहा है कि हथिनी और उसके दो बच्चों की मौत हो गई। हम कहते हैं कि मां और दो बच्चों की मौत हो गई। पूरा गांव रोया। हृदय हमारा भी द्रवित हुआ। अभी भी है। गुस्सा भी है मन में।

इन तीन मौतों का कारण क्या था? हमें लगता है, इन तीन मौतों का कारण हम इंसान ही हैं। हाथियों की मौत की खबर देने वाले अखबारों, वेबसाइटों को खंगालने से पता चला कि जनशताब्दी सुपरफास्ट एक्सप्रेस से कट कर ये तीनों हाथी मारे गए। ये तीनों कट गए थे। गलती किसकी थी? अभी पश्चिम बंगाल की वन एवं पर्यावरण मंत्री ने जांच के आदेश दिये हैं। जांच कमेटी बनी है। जांच कमेटी कब रिपोर्ट देगी, पता नहीं। ऐसे न जाने कितनी कमेटियां बनीं। कितनों ने रिपोर्ट दी, रिपोर्ट पर क्या एक्शन हुआ, किसी को पता नहीं।

बताया जाता है कि रेलवे और वन विभाग एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डाल रहे हैं। रेलवे का कहना है कि उसने तीन घंटे पहले वन विभाग को सूचना दे दी थी। लिहाजा वन विभाग को हाथियों को ट्रैक (रेलवे पटरी) की तरफ हुल्ला पार्टी की मदद से आने से रोकना था।

वन विभाग का कहना है कि उसे रेलवे ने समय पर जानकारी नहीं दी। इस कारण यह बेहद दर्दनाक घटना घटी। कमाल है! दो विभाग आपस में भिड़े पड़े हैं। तीन हाथियों के मरने का दुख इन विभागों को वास्तव में है भी या नहीं, कहा नहीं जा सकता। दोनों विभाग तो एक-दूसरे पर आरोप लगाने में व्यस्त हैं।

हाथियों का आईक्यू लेबल शानदार होता है। ये इंसानों के मित्र होते हैं। देश के बड़े भू-भाग में हाथियों की पूजा होती है। भगवान श्रीगणेश से हाथियों को सीधे-सीधे जोड़ कर देखा जाता है क्योंकि श्रीगणेश का सिर हाथी का ही है। एकदंत हैं। सभी देवताओं में सबसे पहले पूजे जाते हैं श्रीगणेश। लेकिन, हमारी सभ्यता-संस्कृति का अभिन्न अंग होने के बावजूद हाथियों को वह महत्व हाल के दिनों में हम नहीं दे रहे, जो उन्हें मिलना चाहिए था। हमें उनके दांत लुभाते हैं, जो लाखों में बिकते हैं। चंद पैसों की खनक, दौलत की हवस हमें हाथियों की हत्या करने के लिए मानसिक तौर पर तैयार कर देती है और हम वह कर डालते हैं, जो हमें नहीं करना चाहिए था।

सरकारें भी इसके लिए दोषी हैं। नौकरशाही तो भयंकर रुप से दोषी हैं। जमशेदपुर के दैनिक भास्कर में छपी रिपोर्ट के अनुसार, एलीफैंट इंट्रूशन डिटेक्शन सिस्टम बन कर तैयार है। एक माह पहले ही इसका सफल परीक्षण किया जा चुका है। वंतारा से प्रशिक्षित हाथी पर इसका सफल प्रयोग भी किया गया था। सब कुछ आशा के अनुरुप हुआ। यह डिवाइस 15 करोड़ की लागत से तैयार किया था। अब आप सोचें, एक माह पहले डिवाइस का सफल परीक्षण कर लिया गया। सारा कुछ ओके रहा। लेकिन इस डिवाइस को जहां लगाना चाहिए था, वहां लगाया नहीं गया। अगर यह डिवाइस (एलीफैंट इंट्रूशन डिटेक्शन सिस्टम) लगा दिया जाता तो तीन हाथी नहीं मरते। यह सरकारों, नौकरशाही की लापरवाही नहीं तो क्या है?

हाथी एक प्राणी ही नहीं है। अव्वल तो यह झारखंड का राजकीय पशु है। दूसरे भारतीय संस्कृति में इसकी पूजा होती है। आप दक्षिण के राज्यों में चले जाएं तो पाएंगे कि गणेश वंदना के बाद, उन्हें भोग लगाने के पश्चात हजारों लोग हाथी को भोग लगाते हैं तभी अन्न ग्रहण करते हैं। ऐसे पूजनीय प्राणियों की हत्या पर अगर हम मुखर नहीं हुए तो हमारे इंसान होने पर शक होगा ही!

इस अंक में ज्यादातर सामग्री हाथी पर ही है। हमने शोध के बाद ये सामग्री आपके लिए जुटाए हैं। वन्य प्राणी विशेषज्ञों से बातचीत है, घटनाक्रम के बारे में ज्यादा विवरण है, हाथियों के प्रति चिंता और अपने सरोकार का इजहार है। मन उद्वेलित है। इस अंक में हमारा प्रयास आपको कैसा लगा, बताईएगा जरूर।

आपका ही

(अंशुल शरण)

स्वच्छता सर्वेक्षण

जमशेदपुर पूरे देश में तीसरे स्थान पर, 5 स्टार रैंकिंग मिली

राष्ट्रपति के हाथों प्रधान सचिव-नगर विकास एवं आवास विभाग सुनील कुमार, निदेशक-सूडा सूरज कुमार एवं उप नगर आयुक्त (जेएनएसी) कृष्ण कुमार ने पुरस्कार ग्रहण किया।

■ **युगांतर प्रकृति नेटवर्क**

झारखंड के जमशेदपुर को 3 से10 लाख की आबादी में स्वच्छता सर्वेक्षण में पूरे देश में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है जबकि झारखंड राज्य में जमशेदपुर ने पहला स्थान प्राप्त किया है। जमशेदपुर को फाइव स्टार रैंकिंग भी मिली है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 17 जुलाई को विज्ञान भवन में आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय के समारोह में स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-25 का पुरस्कार प्रदान किया। राष्ट्रपति के हाथों प्रधान सचिव-नगर विकास एवं आवास विभाग सुनील कुमार, निदेशक-सूडा सूरज कुमार एवं उप नगर आयुक्त (जेएनएसी) कृष्ण कुमार ने पुरस्कार ग्रहण किया। आपको बता दें कि स्वच्छता सर्वेक्षण 2024-25 के पुरस्कार के लिए झारखंड से जमशेदपुर को नामित किया गया था। आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय के समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया गया। इस बीच जमशेदपुर के उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने इस उपलब्धि पर सफाई कर्मियों, जागरूक शहरवासियों एवं नगरीय निकाय प्रशासन को बधाई दी। उन्होंने कहाः यह पूरे जिले के लिए गौरव का क्षण है, क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर जमशेदपुर को स्वच्छता के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया।

उप नगर आयुक्त (जेएनएसी) कृष्ण कुमार ने कहा कि सफाई के क्षेत्र में शहर में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। जनता का भरपूर समर्थन मिला है। यह पुरस्कार जनता को समर्पित है। कुछ क्षेत्र हैं, जहां ज्यादा फोकस किये जाने की जरूरत है। ■

कार्बन क्रेडिट स्कीम

पर्यावरण संरक्षण के साथ पैसा भी कमा रहे किसान

युगांतर प्रकृति नेटवर्क

धरती की हरीतिमा बढ़ाने में सरकार की कार्बन क्रेडिट स्कीम (कार्बन फाइनेंस प्रोजेक्ट) गेम चेंजर साबित हो सकती है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मानना है कि किसानों के लिए यह योजना 'आम के आम और गुठलियों के दाम' सरीखी है। इसका असर भी दिखने लगा है। गोरखपुर मंडल में 67 ऐसे किसानों को सूचीबद्ध किया गया है जिन्हें इस योजना के लाभ के एवज में 4,40,000 रुपये की धनराशि मिलने जा रही है।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2070 तक देश को कार्बन शून्य बनाने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को हासिल करने के प्रयासों की एक कड़ी कार्बन क्रेडिट स्कीम भी है। इस स्कीम को प्रदेश की योगी सरकार ने प्राथमिकता से लागू किया है। इस स्कीम के तहत किसानों द्वारा कृषि वानिकी में किए गए पौधरोपण से कार्बन क्रेडिट के माध्यम से उनकी आय में वृद्धि होगी। इस योजना में किसानों को उन पौधों का रोपण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो तेजी से बढ़ते हैं। इसमें छह अमेरिकी डॉलर के हिसाब से प्रति कार्बन क्रेडिट की खरीद होगी जिससे किसानों को लगाए गए प्रत्येक पेड़ के लिए 250-350 रुपये की आमदनी होगी। यह आय वृक्ष की कीमत के अतिरिक्त होगी। इस योजना को लागू करने में प्रदेश सरकार ने द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट (टेरी) का सहयोग लिया है। लगाए गए पौधों के ग्रोथ का सर्वे कराने के बाद टेरी द्वारा ऑनलाइन पेमेंट किसानों के बैंक खातों में किया जा रहा है।

मंडल में किसान क्रेडिट योजना में स्वीकृत राशि

जिला	किसान	धनराशि
गोरखपुर	14	95000
देवरिया	24	160000
कुशीनगर	22	145000
महराजगंज	07	40000

गोरखपुर मंडल इस स्कीम के पहले चरण में शामिल है। मंडल में गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर और देवरिया जिले के 67 किसानों को कार्बन क्रेडिट का लाभ मिलने जा रहा है। लाभान्वित होने जा रहे किसानों में से एक सहजनवा क्षेत्र के योगेंद्र नाथ मिश्र भी हैं। उन्हें कार्बन क्रेडिट की एवज में 10000 रुपये मिलने हैं। उनकी अनुपस्थिति में उनके पुत्र से हुई बातचीत में उन्होंने कहा कि योगी सरकार, पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करने के साथ ही हम किसानों की आय बढ़ाने का भी प्रयास कर रही है। हमारे खाते में पैसा आते ही अन्य किसान भी जागरूक होंगे। कार्बन क्रेडिट के बदले 10000-10000 रुपये के लाभ के लिए सूचीबद्ध देवरिया के पथरदेवा ब्लॉक के जयराम राय और कुशीनगर जिले के पडरौना क्षेत्र के ओमप्रकाश सिंह का भी मानना है कि यह योजना काफी अच्छी है। पेड़ हमारे रहेंगे और इसे लगाकर देखभाल करने का पैसा सरकार दे रही है। गर्व भी रहेगा कि पर्यावरण संरक्षण में हमारा भी योगदान रहेगा। ■

सेहत के लिए कितना खतरनाक है प्लास्टिक?

सुबह उठने से लेकर रात में सोने तक ज्यादातर चीजें हम प्लास्टिक की ही इस्तेमाल करते हैं। जिसका हमारी हेल्थ पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कैसे प्लास्टिक हमारे लिए खतरनाक है, यह डॉक्टर से जानिए...

अनिता शर्मा

हमारी लाइफ में प्लास्टिक का इस्तेमाल बहुत ज्यादा बढ़ गया है। सोचिए आप एक ठंडा पानी का ग्लास हाथ में लेकर पी रहे हैं। गर्मी जोरों पर है और वो प्लास्टिक का ग्लास धूप में रखा था। आपको राहत तो मिल रही है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि वह राहत साथ में जहर भी दे रही है? हमारी लाइफ में प्लास्टिक का इस्तेमाल इतना बढ़ गया है कि छोटी-छोटी चीज को रखने के लिए हम प्लास्टिक का ही इस्तेमाल करते हैं। हम सभी जानते हैं कि प्लास्टिक सेहत के लिए कितना खतरनाक हो सकता है, लेकिन फिर भी हम दिन प्रति दिन इस्तेमाल किए जा रहे हैं। आइए जानते हैं डॉक्टर समीर भाटी से कि कैसे प्लास्टिक आपके लिए खतरनाक हो रहा है?

प्लास्टिक कैसे हमारी लाइफ को प्रभावित करता है?

प्लास्टिक अब हमारे खाने-पीने और सांसों में शामिल हो चुका है। जिस पानी की बोतल को हम गर्मी में राहत समझकर उठाते हैं, वो अगर घंटों धूप में रही हो, तो उसके अंदर के प्लास्टिक के छोटे-छोटे माइक्रोप्लास्टिक और नैनो प्लास्टिक पानी में घुल जाते हैं। बाजार, ढाबों या ऑफिस में अक्सर देखा गया है कि चाय, कॉफी या ठंडा पानी प्लास्टिक के ग्लास में दिया जाता है। लेकिन क्या आपने गौर किया कि वो ग्लास कितनी देर से धूप में रखा है? गर्मी में प्लास्टिक का टूटना और उसमें से हानिकारक तत्वों का निकलना बेहद आम बात है। और वो सब सीधा हमारे शरीर में जाता है। आपने देखा होगा कि सड़कों के किनारे चिप्स, नमकीन जैसी चीजें अक्सर धूप में रखी जाती हैं। उनके रैपर प्लास्टिक के होते हैं। जब ये लंबे समय तक गर्मी में रहते हैं, तो उनके अंदर का खाना भी उससे प्रभावित होता है।

बाजार में मिलने वाली पानी की बोतलें कई बार धूप में रखी जाती हैं। कोई कैसे जाने कि वो बोतल कितनी देर से गर्मी में पड़ी है?

कुछ कंपनियां नियमों का पालन करती हैं और सुरक्षित प्लास्टिक का इस्तेमाल करती हैं, लेकिन सभी ऐसा करें यह जरूरी नहीं। जब भी आप बोतल खरीदें, कोशिश करें कि वो किसी ठंडी जगह से निकाली गई हो, ना कि बाहर धूप में रखी गई हो। ये एक छोटा कदम हो सकता है, लेकिन इससे आप अपने शरीर को प्लास्टिक से बचा सकते हैं।

प्लास्टिक से बचने के लिए क्या करें?

प्लास्टिक के ग्लास में कुछ भी पीने से बचें। कोशिश करें कि स्टील, कांच या पेपर ग्लास का इस्तेमाल हो। बाहर से कोई भी पैकेट बंद खाना लेने से पहले देखें कि वो लंबे समय से धूप में तो नहीं पड़ा है। पानी की बोतल अगर लेनी भी हो, तो ठंडी जगह से ही लें। जो बोतल कई घंटों से गर्मी में पड़ी हो, उसे ना लें। बच्चों को सिखाएं कि किसी भी रैपर वाली चीज को खरीदने से पहले सोचें और देखें कि वो सुरक्षित है या नहीं। हम क्या खा रहे हैं, ये समझना जरूरी है। कई बार हम सोचते हैं कि हम तो हेल्दी खाना खा रहे हैं, लेकिन सोचिए वो खाना अगर प्लास्टिक से भरे रैपर में आया हो और घंटों धूप में रहा हो, तो क्या वो वाकई हेल्दी है? हमें आज के समय में सिर्फ ये नहीं देखना कि हम क्या खा रहे हैं, बल्कि ये भी देखना है कि किस बर्तन में खा रहे हैं, कहां से आया है और कैसे स्टोर किया गया है। ■

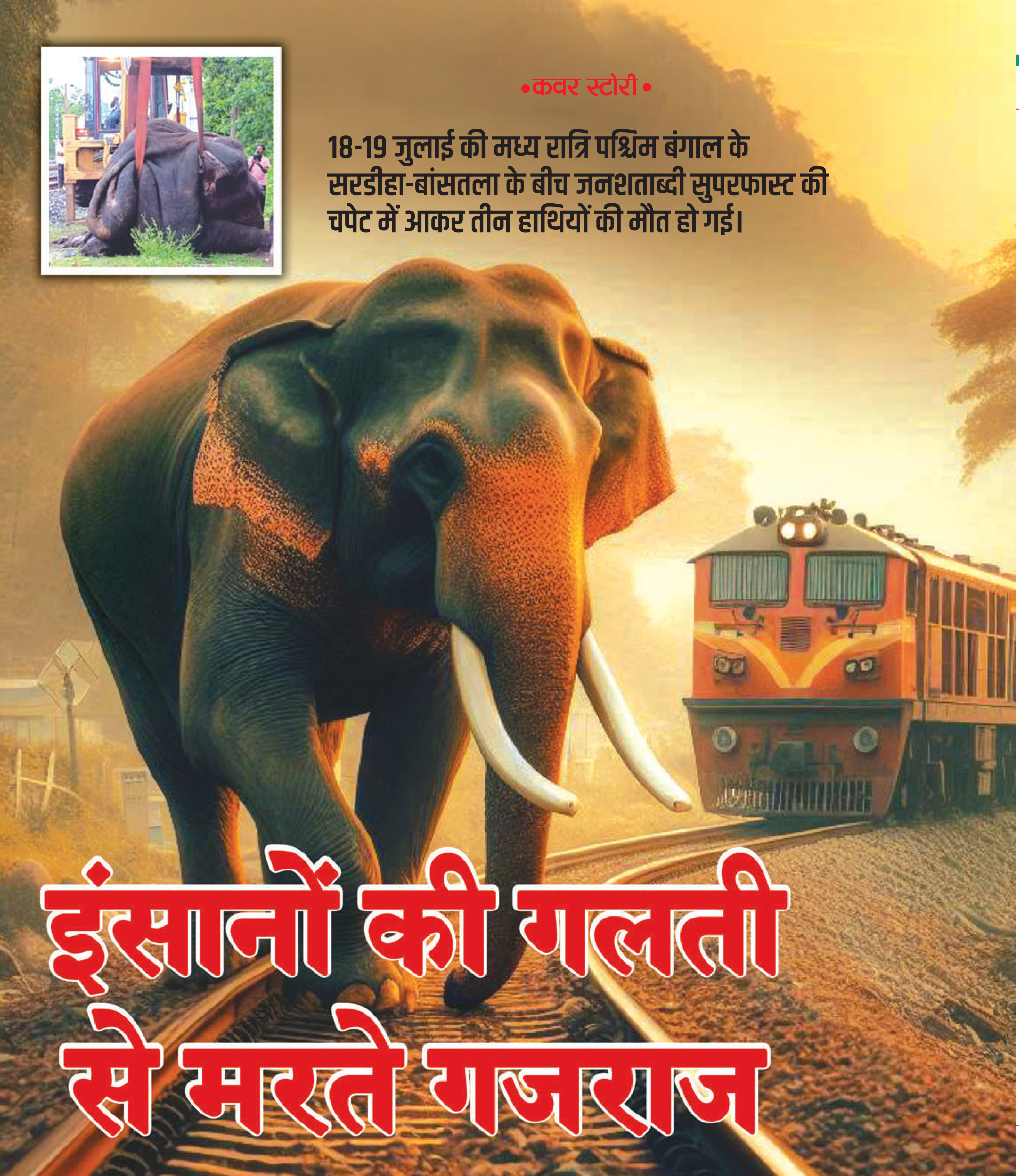

18-19 जुलाई की मध्य रात्रि पश्चिम बंगाल के सरडीहा-बांसतला के बीच जनशताब्दी सुपरफास्ट की चपेट में आकर तीन हाथियों की मौत हो गई।

इंसानों की गलती से मरते गजराज

•कवर स्टोरी•

कहते हैं, हाथी इंसान की बात खूब समझता है। लेकिन इंसान? वह सिक्कों की खनक ज्यादा सुनता और समझता है। हाथी उसकी प्राथमिकता में न कभी था, न है। आने वाले दिनों में क्या होगा, कोई नहीं जानता। ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि झाड़ग्राम में दो नन्हें और एक मादा हथिनी के कत्ल के छींटे इन्हीं इंसानों पर हैं। अपनी जिम्मेदारियों से सर्वथा अलग ये इंसान चाहे रेलवे के पदाधिकारी हों या फिर वन विभाग के, कतई जिम्मेदारी निभाने में असफल रहे हैं। आरोप-प्रत्यारोप के दौर में यह सवाल बड़ा मौजू है कि हाथी रेलवे लाइन की तरफ बढ़े तो लाइनमैन, स्टेशन मास्टर ने क्या किया? वन विभाग के लोग कहां थे? जनशताब्दी को 120 की रफ्तार में चलाने की अनुमति किसने दी? क्या उस इलाके में हाथियों को लेकर कोई कॉशन नहीं दिया गया? वन विभाग क्या कर रहा था? रेलवे के अफसरान क्या कर रहे थे? गलती इंसानों ने की, जान निरीह हाथियों को गई। हाल ही में दो हाथियों की मौत और चार साल पहले मुसाबनी, पूर्वी सिंहभूम तथा पलामू टाइगर रिजर्व (पीटीआर) में बिजली के तारों से हाथियों की मौत ने मानव-हाथी संघर्ष, अपर्याप्त संरक्षण उपायों और वन्यजीव संरक्षण में व्यवस्थागत खामियों को उजागर किया है। ये घटनाएं कई सवालों को जन्म देती हैं। क्यों नहीं है झारखंड में एक समर्पित बचाव दल? वन्यजीव देखभाल में इतनी लापरवाही क्यों? निजी संरक्षण हेतु पहल (जैसे अंबानी की वंतारा) इसमें क्या भूमिका निभा सकती है? इस आवरण कथा में हाथी मृत्यु के कारण, संरक्षण में कमियां और निजी पहल के कानूनी पहलुओं की पड़ताल की गई है...

▪ आनंद सिंह/एस. विद्यासागर

प्राणियों में शानदार बुद्धमता क्षमता के धनी हाथियों की स्थिति लगातार खराब होती चली जा रही है। वह इंसानों की लापरवाही के कारण अपनी जान गंवा रहे हैं। इंसान अपने फर्ज को पूरा नहीं कर रहा है। इसके एवज में हाथियों को अपनी जान गंवानी पड़ रही है। बीते 18-19 जुलाई की मध्य रात्रि पश्चिम बंगाल के सरडीहा-बांसतला के बीच जनशताब्दी सुपरफास्ट की चपेट में आकर तीन हाथियों की मौत हो गई। बेहद तीव्र गति से आ रही जनशताब्दी सुपरफास्ट ने तीन हाथियों को उड़ा दिया। मरने वालों में एक नन्हा हाथी भी था। दो अन्य हाथियों की भी मौत हुई जिनमें एक नर और एक मादा थी।

इस दुखद घटनाक्रम के बाद जिम्मेदारी एक-दूसरे के माथे पर डालने की गंदी राजनीति शुरु हो गई है। इस पूरे प्रकरण में दो विभाग संलिप्त हैं। एक है वन विभाग, दूसरा है रेलवे। वन विभाग का कहना है कि उसने तीन घंटा पहले फोन और वाट्सएप्प के माध्यम से रेलवे को सूचित कर दिया था कि इलाके में हाथियों का झुंड है। ट्रेन धीरे चलाइएगा। रेलवे का कहना है कि वन विभाग ने उसे कोई सूचना नहीं दी। दी भी होगी तो विलंब से। अब दोनों विभागों की एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डालने का खेल चल रहा है। बड़ा सवाल यह है कि क्या इन विभागों के एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डालने से जो तीन हाथी मारे गए, वो जीवित हो उठेंगे? जवाब है-नहीं। फिर आगे क्या होगा? पश्चिम बंगाल की वन मंत्री ने इस संबंध में जांच कमेटी गठित करने की घोषणा कर दी है। इस जांच कमेटी से क्या होगा? पहले भी कई जांच कमेटियां बनी हैं। उनकी अनुशंसा पर कितना काम हुआ? कितने लोग दंडित हुए? सिफर! ऐसी जांच कमेटियों की अनुशंसाओं को मान कर कड़क कार्रवाई की जाती तो 18-19 की रात जो हुआ, वह नहीं होता।

हाथी मर रहे हैं। 8 साल में 50 से ज्यादा हाथी मर चुके हैं। किसी के आंख से एक बूंद भी नहीं गिरा। झारखंड से सटे पश्चिम बंगाल के जिलों से हाथी टहलते हुए जारखंड में आ जाते हैं या फिर झारखंड से टहलते हुए पश्चिम बंगाल में चले जाते हैं। हमने उन इलाकों में अपनी रिहायश बना लिये, जो मूलतः हाथियों के लिए था। हम हाथियों के घर में घुस जाएंगे तो गजराज कहां घुसेंगे? वह तो अपना इलाका चाहते हैं। बस! और हम हैं कि लगातार उनके इलाके को अलग-अलग बहानों से अपना बनाने पर तुले हुए हैं। इन तीन हाथियों की मौत को वन विभाग और रेलवे किस तरीके से देखता है, यह तो पता नहीं लेकिन जंगल में रहने वाले, उसके किनारे की बस्तियों में रहने वालों ने हाथियों की मौत पर गहरा क्षोभ जताया है। यह क्षोभ कहीं से गलत नहीं है। यह सरकारी विभागों के सिस्टम की लापरवाही का ही नतीजा है कि तीन हाथियों को अपनी जिंदगी गंवानी पड़ी।

• कवर स्टोरी •

अब एक्शन लेने का टाइम

झारखंड का हाथी संकट मानव विकास और वन्यजीव संरक्षण के बीच नाजुक संतुलन की याद दिलाता है। हाल की मौतें और मुसाबनी-पलामू की घटनाएं व्यवस्थागत सुधारों की तत्काल जरूरत को दर्शाती हैं। समर्पित बचाव दल की कमी और वन्यजीव देखभाल में लापरवाही ने संकट को बढ़ाया है, जबकि वनतारा जैसी निजी पहल समाधान का रास्ता दिखाती हैं। लेकिन निजी सहयोग के लिए मजबूत कानूनी ढांचा जरूरी है। बचाव ढांचे में निवेश, गलियारों की बहाली और समुदाय की भागीदारी से झारखंड अपने राज्य प्रतीक हाथी को बचा सकता है। अब समय है कि झारखंड कार्रवाई करे, वरना इसकी हाथी आबादी अपूरणीय क्षति की ओर बढ़ रही है।

झारखंड में हाथियों की मौत

वर्ष 2025 की शुरुआत में झारखंड में दो हाथियों की मौत ने सुर्खियां बटोरीं। पलामू टाइगर रिजर्व (पीटीआर) के पश्चिम जंगल में एक हाथी मृत पाया गया। प्रारंभिक जांच में पता चला कि यह मौत संभवतः हाथियों के आपसी संघर्ष के कारण हुई, क्योंकि घटनास्थल पर खून के धब्बे मिले। दूसरी घटना के कारण और स्थान की जानकारी अभी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के इंतज़ार में है। पिछले एक महीने में पलामू टाइगर रिजर्व में हाथी की मौत की खबर ने राज्य की हाथी आबादी की सुरक्षा पर सवाल खड़े किए हैं। 28 नवंबर 2023 को भी ऐसी ही घटना हुई थीं। पूर्वी सिंहभूम जिले के मुसाबनी में हाई टेंशन बिजली के तारों के संपर्क में आने से पांच हाथियों की मौत हो गई थी। ये घटनाएं मानव-हाथी संघर्ष, निवास स्थान के नुकसान और सुरक्षा उपायों की कमी की ओर इशारा करती हैं।

मौत के कारण

मानव-हाथी संघर्ष: 2008 से 2024 तक झारखंड में 1,251 मानव और 202 हाथी मृत्यु दर्ज की गई। मानव बस्तियों का हाथी गलियारों में अतिक्रमण होने से हाथी गांवों में घुस रहे हैं, जिससे फसलें नष्ट हो रही हैं और लोग बदले में हिंसक कार्रवाई कर रहे हैं। 2022-23 में बोकारो जिले में 13 लोगों की मौत, 12 लोगों का घायल होना और 900 से ज्यादा मामले फसल व संपत्ति नुकसान के सामने आए। किसान अक्सर अवैध बिजली के तारों का उपयोग करते हैं, जो हाथियों के लिए घातक हैं। यह मुसाबनी के घटनाक्रम में साफ-साफ दिखा है।

बिजली का झटका: बिजली का झटका हाथी मृत्यु का एक प्रमुख कारण है। मुसाबनी और पलामू में चार साल पहले हुई घटनाएं इसकी मिसाल हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अवैध बिजली के तारों पर निगरानी की कमी इसका मुख्य कारण हैं। हाथियों का आपसी संघर्षः फरवरी 2025 की पलामू घटना में खून के धब्बों से पता चलता है कि नर हाथियों के बीच वर्चस्व की लड़ाई मृत्यु का कारण हो सकती है। यह तनाव संभवतः निवास स्थान के सिकुड़ने और सामाजिक ढाँचे में बदलाव के कारण है।

निवास स्थान का नुकसानः 2017 में झारखंड की हाथी आबादी 679 थी, जो 2022-23 में घटकर 217 रह गई। खनन, जंगल कटाई और मानव अतिक्रमण ने मुसाबनी और पलामू जैसे क्षेत्रों में हाथी गलियारों को नष्ट किया है, जिससे हाथी मानव-बस्तियों में घुस रहे हैं। हस्तक्षेप की कमीः झारखंड में त्वरित बचाव तंत्र की कमी के कारण घायल या तनावग्रस्त हाथियों को समय पर मदद नहीं मिलती, जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है।

समर्पित बचाव दल की कमी

झारखंड में वन्यजीव संरक्षण की सबसे बड़ी कमी है एक समर्पित हाथी बचाव दल का न होना। असम जैसे राज्यों ने रेडियो कॉलरिंग जैसे उन्नत तरीकों से हाथी झुंडों की निगरानी शुरू की है, लेकिन झारखंड में ऐसी व्यवस्था नहीं है।

संसाधनों की कमी: झारखंड वन विभाग के पास बजट और कर्मचारियों की कमी है। 2022-23 में मानव-हाथी संघर्ष के लिए 10।13 करोड़ रुपये मुआवजे के रूप में दिए गए, लेकिन बचाव ढांचे के लिए निवेश नगण्य है।

बिना ऑपरेशन कंपाउंड का है बर्वे में रेस्क्यू सेंटर: नटेश

झारखंड में वन्यजीव संरक्षण के लिए एक बड़ी पहल की जा रही है। राज्य के मुख्य वनसंरक्षक (सीसीएफ) एसआर नटेश ने जानकारी दी है कि ओरमाझी के पास बर्वे गांव में झारखंड का पहला राज्य स्तरीय वन्यजीव रेस्क्यू सेंटर बन रहा है। लंबे समय से इस सेंटर की जरूरत महसूस की जा रही थी, खासकर घायल और बीमार वन्यजीवों की त्वरित चिकित्सा और देखभाल के लिए। नटेश के अनुसार, बर्वे में रेस्क्यू सेंटर का ढांचा तैयार किया जा रहा है, लेकिन फिलहाल वहां ऑपरेशन कंपाउंड का निर्माण नहीं हुआ है। यह ऑपरेशन कंपाउंड सेंटर की सबसे अहम इकाई होगी, जहां गंभीर रूप से घायल जानवरों की चिकित्सा की जाएगी। ऑपरेशन कंपाउंड के निर्माण के बाद आवश्यक अनुमति जियोलॉजिकल विभाग से लेनी होगी, जिसके बाद यह केंद्र पूरी तरह से कार्यशील हो सकेगा। जैसे ही बर्वे में राज्य स्तरीय रेस्क्यू सेंटर का काम पूरा होता है और वह संचालन के लिए तैयार होता है, वैसे ही राज्य सरकार रीजनल स्तर पर भी रेस्क्यू सेंटर बनाने की प्रक्रिया शुरु करेगी। इससे अलग-अलग क्षेत्रों में वन्यजीवों के इलाज और राहत कार्यों में तेजी आएगी। यह जानकारी ऐसे समय में आई है जब विशेषज्ञ और पूर्व अधिकारी लगातार झारखंड में रेस्क्यू सुविधाओं की कमी को लेकर चिंता जता रहे हैं। राज्य में यह पहला अवसर होगा जब एक समर्पित वन्यजीव चिकित्सा केंद्र विकसित हो रहा है, जिससे वन्यजीव संरक्षण को नई दिशा मिल सकती है।

लेटलतीपी वाली नौकरशाही: रेडियो कॉलरिंग जैसे प्रस्ताव केंद्र सरकार की मंजूरी के इंतज़ार में अटके हैं, जिससे सक्रिय समाधान में देरी हो रही है। यह नौकरशाही की लेटलतीफी का जीता-जागता नमूना ही तो है।

विशेष प्रशिक्षण की कमी: हाथी बचाव के लिए विशेष कौशल जैसे ट्रैंक्विलाइज़ेशन और पशु चिकित्सा की आवश्यकता होती है, लेकिन झारखंड के वन कर्मियों को इसका प्रशिक्षण नहीं मिला है।

प्रतिक्रियात्मक रवैया: राज्य का संरक्षण दृष्टिकोण ज्यादातर प्रतिक्रियात्मक है> जैसे मुआवजा देना या पोस्टमॉर्टम करना, न कि गलियारों की बहाली जैसे निवारक उपाय।

वन्यजीव देखभाल में लापरवाही

झारखंड में बार-बार होने वाली हाथी मृत्यु और मानव हताहतों से वन्यजीव देखभाल में लापरवाही साफ दिखती है।

अपर्याप्त निगरानी: असम जैसे राज्यों के विपरीत झारखंड में हाथी झुंडों की रीयल-टाइम निगरानी की कमी है, जिससे वे मानव बस्तियों में भटक जाते हैं।

गलियारों की सुरक्षा में विफलता: वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया (डब्लूटीआई) की 2017 की रिपोर्ट में मुसाबनी के गलियारों को खनन और विकास से क्षतिग्रस्त बताया गया। सरकार ने इनकी बहाली में देरी की है।

समुदाय की भागीदारी की कमीः स्थानीय समुदायों को संरक्षण में शामिल करने के प्रयास न्यूनतम हैं। चाकुलिया, पूर्वी सिंहभूम में 94% किसान हाथी हमलों से प्रभावित हैं। इसके बावजूद सौर बाड़ या फसल विविधीकरण जैसे गैर-घातक उपायों को बढ़ावा नहीं दिया गया।

देर से प्रतिक्रिया: पलामू और मुसाबनी की घटनाओं में देरी से प्रतिक्रिया की प्रवृत्ति दिखती है। ज्यादातर जांचें जन आक्रोश के बाद ही शुरू होती हैं।

पशु चिकित्सा सेवाओं की कमीः समर्पित वन्यजीव पशु चिकित्सकों की कमी के कारण घायल हाथियों को समय पर इलाज नहीं मिलता।

वंतारा: निजी संरक्षण का एक उदाहरण

रिलायंस इंडस्ट्रीज के अंतर्गत अनंत अंबानी की वंतारा पहल भारत में निजी संरक्षण का एक प्रमुख उदाहरण है। गुजरात के जामनगर में 3,000 एकड़ में फैली वंतारा विश्व की सबसे बड़ी पशु बचाव और पुनर्वास सुविधा है जो 2,000 से अधिक जानवरों, विशेषकर हाथियों, को आश्रय देती है। यह सर्कस, मंदिरों और संघर्ष क्षेत्रों से हाथियों को बचाकर उन्हें चिकित्सा और सुरक्षित वातावरण प्रदान करती है।

वंतारा का अवलोकन

वंतारा में पशु चिकित्सा अस्पताल, पुनर्वास केंद्र और हाथियों के लिए विशेष बाड़े हैं। यहां पशु चिकित्सक, पोषण विशेषज्ञ और महावत मिलकर व्यापक देखभाल करते हैं। झारखंड जैसे राज्य, जहां बचाव का ढांचा नहीं है, वहां वंतारा एक प्रेरणा हो सकती है, लेकिन इसके कानूनी और नैतिक पहलू विचारणीय हैं।

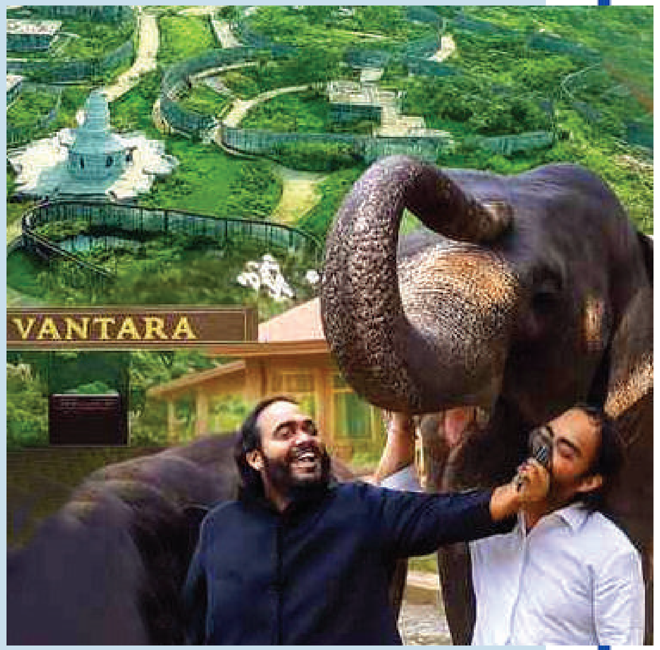

कानूनी पहलू

वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972: हाथी शेड्यूल प्रजाति हैं, जिनके बचाव और पुनर्वास के लिए मुख्य वन्यजीव वार्डन और पर्यावरण मंत्रालय की अनुमति जरूरी है। वंतारा ने ये अनुमतियां ली हैं, लेकिन निजी संस्थाओं पर सरकारी एजेंसियों जितनी सख्त निगरानी नहीं होती।

वन विभाग का निरीक्षण: निजी संस्थाओं को वन विभाग के साथ समन्वय करना होता है। झारखंड में कर्मचारियों और फंड की कमी के कारण वंतारा जैसे सहयोग से मदद मिल सकती है, लेकिन इसके लिए कानूनी ढांचा कमजोर है।

नैतिक चिंताएं: वंतारा जैसे निजी पहल पर हाथियों जैसे आकर्षक प्रजातियों को प्राथमिकता देने का आरोप लगता है। जंगली हाथियों को गुजरात जैसे गैर-प्राकृतिक वातावरण में ले जाने पर उनके अनुकूलन को लेकर सवाल उठते रहते हैं।

फंडिंग और पारदर्शिता: वंतारा रिलायंस द्वारा वित्तपोषित है, लेकिन कॉरपोरेट प्राथमिकताएं बदलने पर इसकी स्थिरता पर सवाल उठते हैं। इसके वित्त और संचालन की पारदर्शिता सीमित है।

झारखंड के लिए प्रासंगिकता

वंतारा का मॉडल झारखंड के लिए प्रेरणादायक हो सकता है। इसके मोबाइल पशु चिकित्सा दल पलामू या मुसाबनी जैसे क्षेत्रों में त्वरित मदद दे सकते हैं। लेकिन इसके लिए स्पष्ट कानूनी ढांचा और राज्य की निगरानी जरूरी है।

झारखंड के लिए सुझाव

समर्पित बचाव दल: ट्रैंक्विलाइज़ेशन, पशु चिकित्सा और त्वरित प्रतिक्रिया वाहनों से लैस एक विशेष दल बनाना चाहिए। डब्लूटीआई जैसे संगठनों के साथ प्रशिक्षण सहयोग बढ़ाया जाए।

हाथी गलियारों की बहाली: डब्लूटीआई की 2017 की रिपोर्ट के आधार पर मुसाबनी जैसे क्षेत्रों में गलियारों को बहाल करना और खनन पर नियंत्रण जरूरी है।

समुदाय आधारित संरक्षण: जागरूकता अभियान और सौर बाड़ जैसे गैर-घातक उपायों को बढ़ावा देना चाहिए। मुआवजा योजनाएँ त्वरित और पारदर्शी होनी चाहिए।

निगरानी प्रणाली: रेडियो कॉलरिंग और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ लागू करनी चाहिए, जैसा असम में किया गया है।

सार्वजनिक-निजी भागीदारी: वंतारा जैसे संगठनों के साथ सहयोग से बचाव और पुनर्वास को बढ़ावा मिल सकता है, लेकिन इसके लिए स्पष्ट कानूनी ढांचा जरूरी है।

बिजली के खतरों पर रोक: अवैध बिजली बाड़ पर सख्ती और बिजली लाइनों को इंसुलेट या ऊँचा करना चाहिए।

न रेस्क्यू सेंटर, न विशेषज्ञ

झारखंड जैव विविधता से समृद्ध राज्य माना जाता है, लेकिन आज वन्यजीव संरक्षण के बुनियादी ढांचे की गंभीर कमी से जूझ रहा है। लद्दाख राज्य वन्यजीव बोर्ड के सदस्य डॉ. आरके. सिंह ने हाल ही में इस स्थिति पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि झारखंड में वन्यजीवों के लिए एक भी समर्पित रेस्क्यू सेंटर मौजूद नहीं है। ऐसे में जब कोई वन्यजीव घायल या बीमार होता है, तो उसका इलाज स्थानीय पशु चिकित्सकों से करवाना पड़ता है, जिनके पास अक्सर जंगली जानवरों के इलाज का अनुभव या संसाधन नहीं होता। डॉ. सिंह के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र में कम से कम एक प्राथमिक रेस्क्यू सेंटर और राज्य स्तर पर एक अत्याधुनिक केंद्रीय केंद्र होना चाहिए। लेकिन झारखंड में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। राज्य वन विभाग हर साल हजारों करोड़ रुपये वन विकास, डायवर्जन और वन्यजीव संरक्षण पर खर्च करने की योजना बनाता है, लेकिन इन योजनाओं का धरातल पर प्रभाव दिखाई नहीं देता। स्थिति और गंभीर तब हो जाती है जब हम देखते हैं कि झारखंड राज्य वन्यजीव बोर्ड का गठन तो कर दिया गया है, लेकिन उसमें एक भी विशेषज्ञ सदस्य नहीं है। इसका सीधा असर यह होता है कि नीतियों और योजनाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी होती है, और वन्यजीवों की वास्तविक जरूरतें अनदेखी रह जाती हैं। इस उपेक्षा का नतीजा हाल के वर्षों में हाथियों सहित कई वन्य प्रजातियों की मौतों के रूप में सामने आया है। अगर झारखंड को अपनी वन्य धरोहर बचानी है, तो रेस्क्यू सेंटर की स्थापना और विशेषज्ञों की भागीदारी तत्काल सुनिश्चित करनी होगी।

झारखंड में वन्यजीव संरक्षण की नीतिगत विफलता: डीएस श्रीवास्तव

झारखंड के प्रख्यात पर्यावरणविद और वन विभाग के सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी डीएस श्रीवास्तव ने राज्य में वन्यजीव संरक्षण की मौजूदा स्थिति पर गंभीर चिंता जताई है। उनका कहना है कि झारखंड में पिछले कई वर्षों से वन क्षेत्र लगातार उजड़ते जा रहे हैं, लेकिन इसके समाधान के लिए कोई ठोस योजना या नीति नहीं बनाई जा रही। श्रीवास्तव बताते हैं कि एक दशक पहले दलमा क्षेत्र में वन्यजीवों के लिए रेस्क्यू सेंटर बनाने की योजना बनी थी, लेकिन वह कभी मूर्त रुप नहीं ले सकी। बाद में ओरमाझी में भी इसके लिए भूमि चिन्हित की गई, लेकिन वहां भी कोई निर्माण कार्य शुरु नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि अब स्थिति यह हो गई है कि जंगलों में वन्यजीवों के लिए भोजन और पानी की भारी कमी है, जिससे वे गांवों की ओर पलायन कर रहे हैं और मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाएं बढ़ रही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि एक ही मुख्य वन संरक्षक (सीसीएफ) को पूरे राज्य के सभी अभयारण्यों का प्रभारी बना दिया गया है, जिससे निगरानी और संरक्षण कार्य प्रभावित हो रहा है। केंद्र सरकार हर 10 वर्षों में वन्यजीव संरक्षण के लिए नीति बनाती है, और राज्यों को भी ऐसा करना होता है। लेकिन झारखंड में पिछले कई वर्षों से ऐसी कोई नीति नहीं बनी है। डीएस श्रीवास्तव ने कहा कि जब तक नीति नहीं बनेगी, तब तक धरातल पर प्रभावी काम नहीं होगा। उन्होंने यह भी जोड़ा कि आदिवासी मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से संरक्षण को लेकर काफी उम्मीदें थीं, लेकिन उनके कार्यकाल में भी वन क्षेत्रों की स्थिति और खराब हो गई है।

कोल्हान में इस साल एक दर्जन से ज्यादा हाथियों की मौत

▪ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

कोल्हान प्रमंडल क्षेत्र में इस साल अब तक एक दर्जन से ज्यादा हाथियों की मौत हो चुकी है। इनमें नौ हाथियों की जान तो जून और जुलाई में ही गई है। यह स्थिति राज्य में वन्यजीव संरक्षण की असफलता और सुरक्षा खतरों की तस्वीर पेश करती है। सबसे चिंताजनक मामला पश्चिमी सिंहभूम के सारंडा जंगल का है, जहां नक्सलियों द्वारा सुरक्षा बलों से बचने के लिए बिछाए गए आईईडी विस्फोट की चपेट में आकर तीन हाथियों की मौत हो चुकी है। 24 जून को दीघा क्षेत्र में छह साल का हाथी गडरू गंभीर रूप से घायल हो गया था। गुजरात की वंतारा की मेडिकल टीम ने ड्रोन की मदद से उसे खोजा और उपचार शुरू किया, लेकिन संक्रमण के कारण उसकी मौत हो गई। इसके अलावा एक मादा हाथी और एक 15 वर्षीय नर हाथी भी विस्फोट में मारे गए। सरायकेला-खरसावां के ईचागढ़ क्षेत्र में दो और हाथियों की मौत हुई है। इनकी मौत के कारणों की अभी जांच जारी है, लेकिन शुरुआती अनुमान बिजली करंट या मानव-हाथी संघर्ष की ओर इशारा कर रहे हैं। साथ ही दो और हाथी घायल बताए जा रहे हैं, जिनकी तलाश वन विभाग द्वारा की जा रही है। सारंडा जंगल एशिया का सबसे बड़ा साल वन है और लगभग 900 वर्ग किलोमीटर में फैला है, अब नक्सली गतिविधियों का गढ़ बन गया है।

निगरानी की योजना बनी, पर कारगर नहीं

वन विभाग ने ओडिशा के साथ मिलकर निगरानी बढ़ाने की योजना तो बनाई है, लेकिन सुरक्षा कारणों से रेस्क्यू कार्य बाधित हो रहा है। ऐसे में तत्काल प्रभाव से रेस्क्यू टीमें गठित करना, हाथी गलियारों की बहाली करना और नक्सली गतिविधियों पर कड़ा अंकुश लगाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। वरना कोल्हान के जंगलों में हाथियों का अस्तित्व खत्म होने में देर नहीं लगेगी।

हाथी कॉरिडोर अवरुद्ध

दलमा-चांडिल गलियारे में स्वर्णरेखा नहर और रेलवे लाइन ने हाथियों के प्राकृतिक मार्ग अवरुद्ध कर दिए हैं, जिससे वे भोजन और पानी की तलाश में गांवों में प्रवेश करने लगे हैं। इससे न केवल मानव-हाथी संघर्ष बढ़ा है, बल्कि हाथियों की जान भी जा रही है। सारंडा क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा बिछाए गए आईईडी विस्फोट भी हाथियों के लिए नया खतरा बन गए हैं। पिछले महीने तीन हाथी इन्हीं विस्फोटों में मारे गए। स्थिति भयावह होती जा रही है। ऐसे में वन विभाग, रेलवे और बिजली विभाग को मिलकर तत्काल समन्वित प्रयास करने होंगे।

बिजली तार और ट्रेनों से सबसे ज्यादा है हाथियों को खतरा

झारखंड के कोल्हान क्षेत्र में हाथियों के जीवन के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं बिजली के लटकते तार और तेज रफ्तार ट्रेनें। पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां और पूर्वी सिंहभूम जिलों में फैले दलमा और सारंडा जैसे जंगल करीब 100 से ज्यादा हाथी रहते हैं। बिजली विभाग ने वर्षों पहले जंगल और बस्तियों के पास से गुजरने वाले तारों को ऊंचा करने की योजना बनाई थी, पर ज़मीनी हकीकत यह है कि आज भी कई इलाकों में हाईटेंशन तार जमीन से खतरनाक रूप से करीब हैं। 132 केवी के तारों की कम ऊंचाई और गांवों में बिछे अवैध बिजली बाड़ हाथियों के लिए जानलेवा साबित हो रहे हैं। करंट से भी कई हाथियों की जान जा चुकी है।

कभी थे सबसे मुफीद, अब बने कब्रगाह

झारखंड में हाथियों के लिए मुफीद माने जाने वाले दलमा और सारंडा जैसे घने वन क्षेत्र अब उनके लिए मौत की जगह बनते जा रहे हैं। इन इलाकों में हाथियों की संख्या 100 से ज्यादा है, लेकिन लगातार घटते जंगल, टूटते प्रवास मार्ग और बढ़ते मानवीय दखल ने इन हाथियों को संकट में डाल दिया है। 18-19 जुलाई की रात झाड़ग्राम (पश्चिम बंगाल) में ट्रेन से कटकर तीन हाथियों की मौत से पता चलता है यहां हाथी अब सुरक्षित नहीं हैं। वन एवं पर्यावरण के जानकार डीएस श्रीवास्तव की मानें तो दलमा वन्यजीव अभयारण्य से हाथी हर साल मानसून के दौरान पश्चिम बंगाल की ओर पलायन करते हैं। लेकिन झारखंड-बंगाल सीमा पर बनाए गए गहरी खाई (ट्रेंच) ने उनके पारंपरिक प्रवास मार्गों को बाधित कर दिया है। खतरनाक और फिसलन भरी पहाड़ियों से बचते हुए जब हाथी रास्ता भटकते हैं तो वे रेल पटरियों या गांवों की ओर बढ़ जाते हैं, जहां जानलेवा हादसे होते हैं। झाड़ग्राम की यह घटना भी ऐसी ही परिस्थितियों का नतीजा है। पिछले 20 दिनों में ही नीमडीह इलाके में दो हाथियों की मौत ने वन विभाग की कार्यशैली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। इन मौतों का कारण और तरीका एक जैसा होने से लोगों के बीच आशंकाएं गहरायी हैं। स्थानीय लोग बताते हैं कि हाल में हाथियों का झुंड अक्सर गांवों में घुसकर फसलों को नुकसान पहुंचा रहा था, जिससे इंसानों और हाथियों के बीच टकराव बढ़ गया था। वन अधिकारियों और कर्मचारियों की मौजूदगी के बावजूद बार-बार हो रही घटनाएं यह दर्शाती हैं कि एयरकंडिशन रुम में बैठकर बनायी गयी योजनाएं जमीनी स्तर पर निष्क्रिय साबित हो रही हैं।

स्वर्णरेखा परियोजना ने बिगाड़ा हाथियों का गलियारा

एलिफेंट कॉरिडोर ऑफ इंडिया की 2023 की रिपोर्ट इस संकट की पुष्टि करती है। रिपोर्ट के अनुसार, स्वर्णरेखा नहर, रेलवे लाइन और मानव बस्तियों के विस्तार ने दलमा-चांडिल हाथी गलियारे को बाधित कर दिया है। इन कारणों से हाथियों का पारंपरिक मार्ग टूट चुका है, जिससे वे मजबूरन इंसानी बस्तियों की ओर बढ़ रहे हैं। सड़कों, रेलवे लाइन और आबादी के विस्तार के दौरान हाथियों के कोरिडोर की अनदेखी की गयी। जंगलों में बांस और अन्य प्राकृतिक भोजन की कमी, और इंसानी दखल के चलते हाथियों का व्यवहार भी बदल गया है। अब वे खेतों में धान और अन्य फसलें खाने आ रहे हैं, जिससे हिंसक टकराव बढ़ रहे हैं।

डेढ़ दशक में 202 हाथियों की मौत

2008 से 2024 के बीच झारखंड में 202 हाथियों और 1251 लोगों की मौत हो चुकी है। अकेले बोकारो में 2022-23 में 900 से अधिक फसल और संपत्ति क्षति की घटनाएं दर्ज की गईं। इसके बावजूद राज्य में न तो कोई समर्पित रेस्क्यू टीम है, न ही घायल हाथियों के इलाज के लिए कोई त्वरित व्यवस्था। दलमा और सारंडा जैसे महत्वपूर्ण हाथी क्षेत्र खनन, अतिक्रमण और जंगल कटाई से लगातार सिकुड़ते जा रहे हैं। प्रवास मार्गों को बहाल करने और वन्यजीवों की निगरानी के लिए प्रस्तावित रेडियो कॉलर योजना और अर्ली वॉर्निंग सिस्टम अब भी सरकारी स्वीकृति के इंतजार में हैं।

तालमेल की कमी बड़ी वजह: सत्यजीत सिंह

झारखंड में हाथियों की लगातार हो रही मौतों को लेकर वन्यजीव विशेषज्ञों और पूर्व वन अधिकारियों की चिंता गहराती जा रही है। पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक सत्यजीत सिंह का मानना है कि इन हादसों की सबसे बड़ी वजह वन विभाग और रेलवे के बीच तालमेल की भारी कमी है। उनका कहना है कि रेलवे ट्रैक पर हाथियों की निगरानी और सुरक्षा के लिए न तो कोई सेंसर प्रणाली लगाई गई है और न ही मचान जैसी पारंपरिक निगरानी व्यवस्था को बहाल किया गया है। सत्यजीत सिंह के अनुसार, यदि वन विभाग सक्रियता दिखाए और आधुनिक तकनीकों को अपनाने की दिशा में ठोस पहल करे, तो इस संकट को काफी हद तक टाला जा सकता है। उन्होंने कहा कि हाथियों की सुरक्षा के लिए AI आधारित निगरानी सिस्टम विकसित करने की जरुरत है, जो हाथियों की गतिविधियों पर रियल टाइम नजर रख सके और समय रहते रेलवे को सूचना दे सके। हाल ही की एक घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि रामगढ़-बरकाकाना रेल खंड पर एक हथिनी ने ट्रैक के किनारे बच्चे को जन्म दिया। उस समय वन विभाग की त्वरित पहल पर दो घंटे तक रेल परिचालन रोक दिया गया और हाथी का बच्चा सुरक्षित जंगल की ओर लौट गया। यह उदाहरण दर्शाता है कि यदि विभाग सक्रिय हो, तो दुर्घटनाएं टाली जा सकती हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यदि रेलवे सहयोग नहीं करता, तो वन विभाग के पास भारतीय वन अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत कानूनी कार्रवाई करने की पूरी शक्ति है। लेकिन दुर्भाग्यवश, विभाग की ओर से इस दिशा में कोई सख्त कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। वन विभाग को रेलवे ट्रैक पर नियमित रुप से कर्मियों की तैनाती करनी चाहिए, ताकि हाथियों की गतिविधियों पर नजर रखी जा सके और समय रहते किसी भी खतरे को टाला जा सके। यदि अब भी पहल नहीं की गई, तो हाथियों की मौतें थमने वाली नहीं हैं।

200 करोड़ की अंडरग्राउंड केबलिंग योजना फंसी फंड के इंतजार में

झारखंड में वन्यजीवों, विशेषकर हाथियों की जान बिजली के करंट से हो रही मौतों को लेकर चिंता लगातार गहराती जा रही है। मुसाबनी में करंट लगने से पांच हाथियों की दर्दनाक मौत के बाद जो सबक लिया जाना चाहिए था, वह अब तक सरकारी फाइलों में ही दबकर रह गया है। झारखंड बिजली वितरण निगम के महाप्रबंधक अजीत कुमार के अनुसार, इस हादसे के बाद वर्ष 2023 में कोल्हान क्षेत्र में अंडरग्राउंड केबलिंग की एक महत्वाकांक्षी योजना तैयार की गई थी। यह प्रस्ताव लगभग 200 करोड़ रुपये की लागत का है, जिसमें पूरे कोल्हान में हाथी गलियारे (एलिफेंट कॉरिडोर) के भीतर विद्युत तारों को भूमिगत करने की व्यवस्था की जानी है। लेकिन एक साल से अधिक बीत जाने के बावजूद राज्य सरकार की ओर से अब तक फंड आवंटन नहीं हुआ है। इसका सीधा असर यह है कि यह महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट अधर में लटका हुआ है और खुले बिजली तार अब भी हाथियों के लिए जानलेवा साबित हो रहे हैं। अजीत कुमार ने स्पष्ट किया कि झारखंड जैसे वन संपदा वाले राज्य में जहां हाथियों की आवाजाही आम बात है, वहां खुले बिजली तारों का मौजूद होना एक गंभीर सुरक्षा संकट है। उन्होंने कहा कि अंडरग्राउंड केबलिंग न केवल हाथियों की सुरक्षा बल्कि स्थानीय ग्रामीणों की भी सुरक्षा के लिहाज से जरुरी है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर इस योजना को समय पर क्रियान्वित किया जाता, तो अब तक कई हाथियों की जान बचाई जा सकती थी। उन्होंने राज्य सरकार से मांग की है कि वह इस परियोजना को शीघ्र वित्तीय स्वीकृति प्रदान करे, ताकि हाथी गलियारे को सुरक्षित बनाया जा सके।

रेलवे की गति सीमित, पर पालन नहीं होता

रेलवे ने भी हाथी गलियारों में ट्रेनों की गति 30-50 किमी/घंटे तक सीमित कर दी है, लेकिन इसका पालन अक्सर नहीं होता। हाथियों को ट्रेनों से दूर रखने के लिए आधुनिक डिवाइस जैसे सेंसर और अलार्म सिस्टम का परीक्षण जरुर किया गया, लेकिन वह भी प्रयोगशाला से बाहर नहीं निकल पाया।

प्रशिक्षित रेस्क्यू टीम की है जरूरत

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि प्रवास मार्गों को जल्द बहाल नहीं किया गया, दलमा और सारंडा में विकास परियोजनाओं को नियंत्रित नहीं किया गया तो झारखंड अपने राजकीय पशु को खो देगा। सबसे ज्यादा जरुरी प्रशिक्षित रेस्क्यू टीम नहीं बनाई गई है।

जानिए हाथी के बारे में सब कुछ

पूरी दुनिया में हाथी मुख्य रुप से दो प्रकार के होते हैं। अफ्रीकी हाथी और एशियाई हाथी। अफ्रीकी हाथी अफ्रीका में पाए जाते हैं और दो उपप्रजातियों में विभाजित होते हैं-सवाना हाथी और जंगल हाथी। दूसरे हैं एशियाई हाथी जो मुख्य रुप से भारत, श्रीलंका और दक्षिणपूर्व एशिया में पाए जाते हैं। ये दोनों प्रकार के हाथी आकार, व्यवहार, और अन्य विशेषताओं में थोड़े अलग होते हैं।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

- हाथी भूमि पर रहने वाले सबसे बड़े जानवर हैं।
- हाथियों की स्मृति बहुत अच्छी होती है। वे अपने परिवार और समूह के सदस्यों को लंबे समय तक याद रखते हैं।
- हाथी सामाजिक जानवर हैं और वे झुंड में रहते हैं। यह झुंड आमतौर पर एक मातृसत्तात्मक संरचना होती है।
- हाथियों के दांत (टस्क) बहुत मूल्यवान होते हैं, लेकिन दांतों की वजह से हाथियों का शिकार भी किया जाता है।
- हाथी वनस्पति खाते हैं और वे दिन में बहुत समय खाने में बिताते हैं।
- हाथियों की संख्या में कमी के कारणों में से एक है उनके आवासों का नुकसान और हाथीदांत के लिए उनका शिकार। कई देशों में हाथियों के संरक्षण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों में राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य बनाना, हाथियों के शिकार को रोकने के लिए कानून बनाना, स्थानीय समुदायों को हाथियों के संरक्षण में शामिल करना जैसे कदम हैं। भारत में भी हाथियों के संरक्षण के लिए कई परियोजनाएं चल रही हैं। हाथियों को "प्रोजेक्ट एलिफेंट" के तहत संरक्षित किया जा रहा है।
- भारतीय हाथी एशियाई हाथी की एक उपप्रजाति है और ये भारत में पाये जाते हैं। भारतीय हाथी मुख्य रूप से भारत के दक्षिणी और पूर्वी हिस्सों में पाए जाते हैं। इनमें कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और आसाम शामिल हैं।
- भारतीय हाथी भारतीय संस्कृति में भी महत्वपूर्ण हैं और वे कई पारंपरिक त्योहारों और समारोहों में शामिल होते हैं।
- भारतीय हाथियों के बारे में एक और दिलचस्प बात यह है कि वे भारतीय संस्कृति और धर्म में बहुत महत्वपूर्ण हैं। हिंदू धर्म में गणेश भगवान को हाथी के सिर वाले देव के रूप में पूजा जाता है। गणेश को बुद्धि, समृद्धि और अच्छे भाग्य का प्रतीक माना जाता है।
- हाथियों का उपयोग कई पारंपरिक त्योहारों और समारोहों में किया जाता है।
- हाथियों को अक्सर पर्यटन में भी देखा जाता है, जहां लोग हाथियों की सवारी करते हैं या उन्हें जंगल सफारी में देखते हैं।
- हाथी बहुत बुद्धिमान जानवर होते हैं! वे अपनी स्मृति, सामाजिक व्यवहार और समस्या-समाधान क्षमताओं के लिए जाने जाते हैं।
- हाथी बहुत सामाजिक जानवर होते हैं और वे अपने झुंड में मजबूत बंधन

बनाते हैं। वे एक दूसरे की देखभाल करते हैं और दुख में साथ देते हैं।

- हाथी समस्याओं को हल करने में सक्षम होते हैं। वे अपने आसपास के वातावरण को समझते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तरीके ढूंढते हैं।
- हाथियों की बुद्धिमत्ता के कारण उन्हें अक्सर "स्मार्ट जानवरों" की श्रेणी में रखा जाता है। वे अपने व्यवहार में जटिलता दिखाते हैं और अपने पर्यावरण के साथ अच्छी तरह से तालमेल बिठाते हैं।
- हाथी पानी के स्रोतों, भोजन के स्थानों और रास्तों को याद रखते हैं।
- हाथी कई साल पहले हुए घटनाओं को भी याद रख सकते हैं।
- हाथी अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं और एक दूसरे के साथ संवाद भी करते हैं।
- वे अपने पर्यावरण के साथ अच्छी तरह से तालमेल बिठाते हैं और आवश्यकतानुसार अनुकूलन करते हैं।
- हाथी जंगल में लगभग 60-70 साल तक जीवित रह सकते हैं।
- बंदी में रखे गए हाथी उचित देखभाल के साथ 70 साल या उससे अधिक तक जीवित रह सकते हैं।
- हाथियों की उम्र का अनुमान उनके दांतों की स्थिति और अन्य शारीरिक विशेषताओं से लगाया जा सकता है।
- हाथियों का प्रजनन चक्र लंबा होता है। मादा हाथी (हथिनी) हर 4-5 साल में एक बार गर्भवती होती है।
- गर्भावस्था की अवधि लगभग 22 महीने (लगभग 2 साल) होती है, जो भूमि पर रहने वाले जानवरों में सबसे लंबी है।
- आमतौर पर एक बार में एक बच्चा हाथी पैदा होता है। जुड़वां बच्चे बहुत कम होते हैं।
- नवजात हाथी का वजन लगभग 100 किलो होता है और वह जन्म के तुरंत बाद चलने लगता है।
- हथिनी और झुंड के अन्य सदस्य नवजात हाथी की देखभाल करते हैं।
- हाथियों के झुंड में मादा हाथी और उनके बच्चे होते हैं। वयस्क नर हाथी आमतौर पर अकेले या छोटे समूहों में रहते हैं।
- मादा हाथी प्रजनन और बच्चों की देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- झुंड में सभी मादा हाथी नवजात हाथी की देखभाल में मदद करती हैं।
- हाथी पेड़ों और झाड़ियों की पत्तियां खाते हैं।
- वे घास भी खाते हैं, खासकर जब पत्ते कम होते हैं।
- हाथी फल, छाल और अन्य वनस्पति भाग भी खाते हैं।
- हाथी दिन में बहुत बड़ी मात्रा में भोजन करते हैं। यह लगभग 100-300 किलो वनस्पति प्रतिदिन खाते हैं।
- हाथियों को भोजन की उपलब्धता के आधार पर अपने आवास चुनने पड़ते हैं।
- जंगलों में भोजन की विविधता हाथियों के लिए महत्वपूर्ण होती है।
- मानव गतिविधियों के कारण हाथियों के आवास और भोजन की उपलब्धता पर प्रभाव पड़ सकता है।
- हाथी आमतौर पर शांतिपूर्ण जानवर होते हैं, लेकिन वे कुछ परिस्थितियों में हमला कर सकते हैं।
- अगर हाथी खुद को या अपने झुंड को खतरे में महसूस करते हैं, तो वे हमला कर सकते हैं।
- हाथी अपने बच्चों या झुंड के सदस्यों की रक्षा के लिए हमला कर सकते हैं।
- अगर हाथी दर्द में हैं, डर गए हैं, या उत्तेजित हैं तो वे हमला कर सकते हैं।
- अगर हाथियों का आवास या भोजन पर खतरा होता है तो वे आक्रामक हो सकते हैं।

• कवर स्टोरी •

हाथियों की लगातार मौत से पेशानी पर चिंता की लकीरें

■गजराज यानी हाथी झारखंड का राजकीय पशु है, लेकिन इनका गुस्सा राज्य के लिए गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसा कोई हफ्ता नहीं गुजरता जब राज्य के किसी न किसी इलाके से हाथियों के हमले की खबर न आती हो। पर्यावरण मंत्रालय के आंकड़े भी इसकी तस्दीक करते हैं। मंत्रालय ने हाल में एक आरटीआई आवेदन के जवाब में बताया था कि कि झारखंड में 2017 से पांच वर्षों में हाथियों के हमले में 462 लोग मारे गए हैं। लेकिन यह संघर्ष एकतरफा नहीं है। इस दौरान तकरीबन 50 हाथियों की भी अलग-अलग वजहों से मौत हुई है। वन विभाग के आंकड़े के मुताबिक पांच साल में सिर्फ बिजली के करंट की चपेट में आने से 20 हाथी मारे गए। रेलवे ट्रैक पर ट्रेनों की चपेट में आने और तस्करों की वजह से भी हाथियों की मौत की घटनाएं हुई हैं।

■फरवरी 2024 के दूसरे-तीसरे हफ्ते में मात्र 12 दिनों के अंदर हाथी के हमले में 16 लोगों की जान चली गई। वन विभाग ने इसके लिए झुंड से बिछड़े एक हाथी को जिम्मेदार माना। यह गुस्साया गजराज पांच जिलों हजारीबाग, रामगढ़, लोहरदगा, चतरा और रांची में घूम-घूम कर तबाही मचाता रहा। इसने फसलें रौंदी, एक दर्जन जगहों पर दीवारें गिराईं और कई पेड़ उखाड़ डाले। इस दौरान रास्ते में आए कम से कम 20 लोगों को रौंद डाला, जिनमें से 16 लोगों की मौत हो गई। आलम यह कि इसके खौफ से रांची के एसडीओ को इटकी प्रखंड और आसपास के इलाकों में धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लागू करनी पड़ी।

■राज्य के तत्कालीन प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य जीव) शशिकर सामंता ने बताया था कि वन संरक्षक की अध्यक्षता में चार मंडलों में वन अधिकारियों की एक समिति बनाई गई है, जो इस बात की जांच कर रही है कि झुंड से बिछड़ा एक हाथी अचानक इतना उग्र क्यों हो गया? दरअसल हाथियों के गुस्से की वजहें जानने के लिए पिछले तीन-चार दशकों में कई अध्ययन और शोध हुए हैं और इन सभी के निष्कर्ष में यह बात समान रूप से सामने आई है कि मानवीय गतिविधियों ने हाथियों के प्राकृतिक अधिवास और उनके आने-जाने के परंपरागत रास्तों यानी कॉरिडोर को लगातार डिस्टर्ब किया है।

■वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया (डब्ल्यूटीआई) ने साल 2017 में एक रिपोर्ट पेश की थी, जिसमें बताया गया था कि झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और दक्षिण पश्चिम बंगाल का 21 हजार वर्ग किलोमीटर इलाका हाथियों का आवास है। मानव-हाथी संघर्ष के चलते देशभर में जितने लोगों की जान जाती है उनमें से 45 फीसदी इसी इलाके से हैं। आधिकारिक आंकड़े के मुताबिक देश के जंगली हाथियों की कुल संख्या का 11 प्रतिशत हाथी झारखंड में हैं। हालांकि चिंता की बात यह है कि यहां हाथियों की संख्या में लगातार कमी दर्ज हो रही है। राज्य में आखिरी बार 2017 में हाथियों की गिनती हुई थी और इनकी संख्या 555 बताई गई थी, जबकि इसके पांच साल पहले हुई गणना में इनकी संख्या 688 थी। दूसरी तरफ हाथियों के हमले में होने वाली मौतों का सिलसिला भी नहीं थम रहा। 22-23 में अब तक हाथियों के हमले में 100 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। 21-22 में राज्य में 133 लोगों की जान गई थी, तो वर्ष 20-21 में 84 लोग मारे गए थे। जाहिर है, हाथी-मानव संघर्ष में नुकसान दोतरफा हो रहा है।

■वन्य एवं पर्यावरण विशेषज्ञ मानते हैं कि एक जंगल से दूसरे जंगल हाथियों के सुरक्षित आने-जाने के लिए कॉरिडोर विकसित किए जाने चाहिए। कॉरिडोर ऐसे हों, जहां मानवीय गतिविधियां न्यूनतम हों। देश के 22 राज्यों में 27 हाथी कॉरिडोर अधिसूचित हैं। इनमें से झारखंड में एक भी हाथी कॉरिडोर नहीं है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में हाथियों के 108 कॉरिडोर चिह्नित हैं। इनमें 14 झारखंड में हैं, लेकिन एक भी अधिसूचित नहीं है। ऐसे में हाथियों के कॉरिडोर वाले इलाकों में भी बगैर सोचे-समझे निर्माण या खनन कार्य कराए जा रहे हैं। प्रोजेक्ट एलीफेंट के लिए भारत सरकार की संचालन समिति के पूर्व सदस्य डीएस श्रीवास्तव ने पिछले दिनों बताया था कि अनियोजित विकास कार्य, खनन गतिविधियों, अनियमित चराई, जंगल की आग और माओवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ों ने जानवरों के रहवासों को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। हाथियों को बांस और घास की छतरी के पतले होने के कारण भोजन की कमी का सामना करना पड़ रहा है। झारखंड में सारंडा जंगलों से ओड़ीशा में सुंदरगढ़ तक के हाथी कॉरिडोर खनन के कारण नष्ट हो गए। इंडियन फॉरेस्ट सर्विस के 1979 बैच के सेवानिवृत्त अफसर नरेंद्र मिश्रा की मानें तो झारखंड में जंगलों के आसपास उत्खनन, जंगल विस्फोट, नक्सल गतिविधियां, उनके खिलाफ चलाए जाने वाले अभियान और वन तस्करों की करतूतों के कारण हाथियों का प्राकृतिक निवास लगातार प्रभावित हुआ है। मसलन, राज्य के कोल्हान प्रमंडल के जंगल हाथियों के प्राकृतिक आवास के लिए काफी मशहूर थे, लेकिन पिछले तीन दशक में उनकी आश्रयस्थली को काफी क्षति पहुंची है। खनन में बढ़ोतरी हुई। सड़क एवं रेलवे लाइन का विस्तार हुआ। आबादी भी बढ़ी। लेकिन इन सारी गतिविधियों के दौरान हाथियों के कॉरिडोर का ध्यान नहीं रखा गया। नतीजा यह कि हाथी जब जंगल से बाहर निकलते हैं तो स्वाभाविक तौर पर उनका गुस्सा भड़क उठता है। उनके खाने के साधन जंगल में कम होते जा रहे हैं। जंगल भी सिकुड़ते जा रहे हैं. लोग भी हाथी को देखते उसके साथ छेड़छाड़ पर उतर आते हैं।

■झारखंड विधानसभा में 2022 के बजट सत्र में मंत्री चंपई सोरेन ने हाथियों के उत्पात से जुड़े एक सवाल के जवाब में बताया था कि वर्ष 2021-22 में हाथियों द्वारा राज्य में जानमाल को नुकसान पहुंचाये जाने से जुड़े मामलों में वन विभाग ने एक करोड़ 19 लाख रुपये के मुआवजे का भुगतान किया है। उन्होंने अपने जवाब में कहा था कि हाथियों और इंसानों के बीच द्वंद्व बढ़ने के कई कारण हैं। जनसंख्या बढ़ने के कारण वन्यजीव का प्रवास क्षेत्र प्रभावित हुआ है। गांवों में मादक पेय पदार्थ बनाए जाते हैं,जिसकी महक हाथियों को आकर्षित करती है। इस कारण भी हाथियों की आदतों और भ्रमण के मार्ग में बदलाव आया है। हाथी-मानव संघर्ष को रोकने के लिए वन विभाग ने क्विक रिस्पांस टीम का गठन किया है। यह टीम लोगों को जागरुक करती है और वैज्ञानिक और पारंपरिक तरीके से हाथियों को वापस जंगल की ओर भेजने का प्रयास करती है। लेकिन, इन सबके बावजूद सच यही है कि झारखंड में हाथियों और मानवों के संघर्ष की घटनाओं में कोई कमी दर्ज नहीं की जा रही है। ■

(युगांतर प्रकृति आर्काइव से)

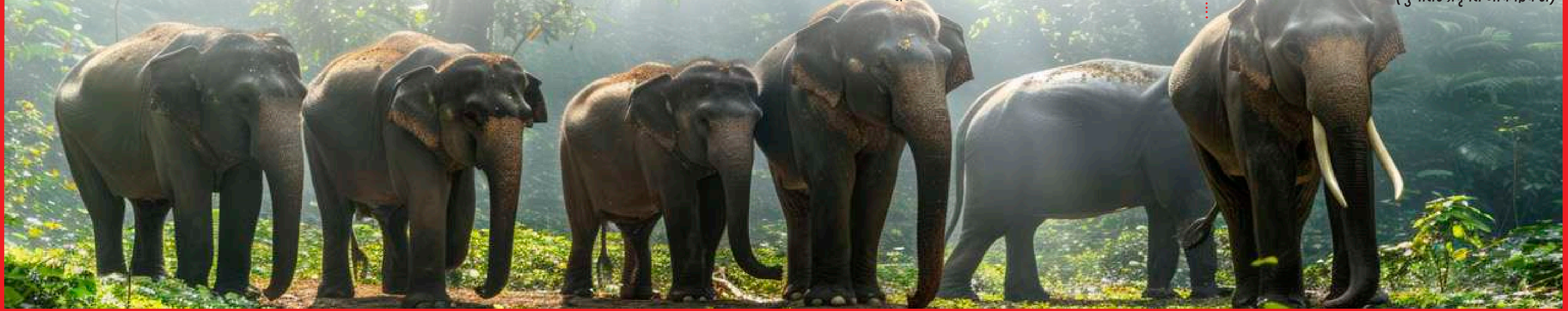

अब कोल्हान में सुरक्षित नहीं रह गये हाथी

■ ब्रजेश सिंह

कोल्हान क्षेत्र में हाल के दिनों में हाथियों की हुई मौतों ने वन्य प्राणियों की सुरक्षा को लेकर किये जा रहे दावों की पोल खोलकर रख दी है। इस कारण लगातार इकोलॉजिकल बैलेंस खराब हो रहा है। 2025 में मार्च से 18 जुलाई तक में अलग-अलग हादसे में 11 हाथियों की मौत हो गयी है। हाथियों की लगातार हो रही मौत की वजह अलग-अलग बतायी जा रही है। कभी नक्सलियों के बम धमाके में घायल होने, कभी ग्रामीणों द्वारा खेतों में लगाये गये करंट तो कभी ट्रेनों से कटकर हाथियों की मौत की घटना सामने आ रही है। लगातार हो रहे हादसे के बाद भी वन विभाग हाथ पर हाथ धरे बैठा है। गौरतलब है कि 184 वर्ग किलोमीटर में फैले दलमा को हाथियों के अभ्यारण्य के रूप में मान्यता प्राप्त है।

संख्या घटती ही गयी

एलिफेंट प्रोजेक्ट का संचालन भी हो रहा है, लेकिन अफसोस कि हाथियों की सुरक्षा तो लगातार इनकी संख्या भी घटती जा रही है। हाथी क्षेत्र वाले राज्यों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 1991 में प्रोजेक्ट एलिफेंट शुरू किया था। प्रोजेक्ट के मुख्य उद्देश्यों में हाथियों, उनके आवास और गलियारों की सुरक्षा, मानव-पशु संघर्ष के मुद्दों का समाधान और कैद में रखे गये हाथियों का कल्याण शामिल है। प्रोजेक्ट एलिफेंट के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी केंद्रीय पर्यावरण मंत्री की अध्यक्षता वाली संचालन समिति पर है। समिति में सरकार के प्रतिनिधियों के साथ-साथ गैर-सरकारी वन्यजीव विशेषज्ञ और वैज्ञानिक भी हैं। अन्य समितियों में कैप्टिव एलिफेंट हेल्थकेयर एंड वेलफेयर कमेटी और सेंट्रल प्रोजेक्ट एलिफेंट मॉनिटरिंग कमेटी है।

• कवर स्टोरी •

कानून ठेंगे पर

भारत में दंतैल हाथी (पुरुष हाथी, जिनके बड़े दांत होते हैं) संरक्षित पशु हैं। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत हाथियों को अनुसूची-1 में सूचीबद्ध किया गया है, जिसका अर्थ है कि उनका शिकार करना या उन्हें नुकसान पहुंचाना एक गंभीर अपराध है। ऐसा करते पाये जाने पर 7 साल तक की कैद हो सकती है। लेकिन, हाथियों को नुकसान पहुंचाने वालों में इसका डर नहीं है। जानकारों का मानना है कि भारत समेत पूरे एशिया में हाथियों की उम्र 40 से 80 वर्ष तक होती है। कैद (चिड़ियाघर) में रहते हुए एशियाई हाथी 50 से 60 वर्ष तक जीते हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि उम्र घटने-बढ़ने की कई वजह होती है। जैसे कैद में रहते हुए इनमें तनाव हावी रहता है। कई बार जरूरत के मुताबिक खाना भी नहीं मिलता है। इस कारण भी हाथियों की मौत होती है।

जरा मिलिए इन डीएफओ महोदय से

कोल्हान के तीन जिलेः पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां और पूर्वी सिंहभूम जिले में वन और वन्य जीवों की सुरक्षा को लेकर करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं। कोल्हान के क्षेत्र को सिंहभूम गज आरक्ष्य कहा जाता है। कोल्हान में पांच डीएफओ का पद है, जिस पर आइएफएस अधिकारियों की पोस्टिंग की जाती है। गाड़ी से लेकर तमाम सुविधाओं के साथ लाखों रुपये वेतन मद में सरकार देती है, लेकिन हाथियों की सुरक्षा नहीं हो पा रही है। पश्चिमी सिंहभूम में चाईबासा, कोल्हान और सारंडा डीएफओ की पोस्टिंग होती है, जबकि सरायकेला-खरसावां जिला और जमशेदपुर में अलग-अलग डीएफओ है। इसके ऊपर दलमा के हाथियों के लिए अलग से एलिफेंट प्रोजेक्ट के डायरेक्टर का पद है। चाईबासा में दो वन संरक्षक का भी पद है, जिसमें आइएफएस की पोस्टिंग होती है और कोल्हान का प्रभार इन सबसे ऊपर आरसीसीएफ का होता है, जो सीनियर आइएफएस का प्रभार है। वर्तमान में कोल्हान के चार पदों पर अकेले जमशेदपुर के डीएफओ सबा आलम अंसारी कई माह से पोस्टेड हैं। सबा आलम अंसारी की पोस्टिंग जमशेदपुर डीएफओ हैं। इसके अलावा दलमा के एलिफेंट प्रोजेक्ट डायरेक्टर, सरायकेला-खरसावां के डीएफओ और चाईबासा के वन संरक्षक पद का अतिरिक्त प्रभार भी दिया गया है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि वन संरक्षण और वन्य जीव संरक्षण का क्या हाल है।

बंगाल में हाथियों के साथ अत्याचार

2010 के आसपास बंगाल ने हाथियों के मूवमेंट को रोकने के लिए बड़े ट्रेंच की खुदाई कर दी। इससे कोल्हान में हाथियों का आतंक तब बढ़ गया। इसके बाद एलिफेंट कॉरिडोर प्रभावित हो गया। इसके अलावा बंगाल की ओर इलेक्ट्रिक फेंसिंग कर दी गयी है। इससे हाथियों का मूवमेंट नहीं हो रहा है।

दावे खोखले साबित

ट्रेन से हाथियों के कटने की घटनाएं काफी ज्यादा होती हैं। खास तौर पर कोल्हान में ऐसी घटनाएं लगातार हो रही हैं। इस पर रोक के लिए रेलवे और वन विभाग में कई बार समन्वय मीटिंग हुई। रेलवे की ओर से संवेदनशील इलाके या हाथियों के मूवमेंट वाले एरिया में ट्रेनों की स्पीड कम करने के दावे किये गये। ट्रैक के किनारे पर फेंसिंग और हाथियों के मूवमेंट को रोकने के लिए कभी ड्रोन तो कभी एआइ से लैस कैमरे की व्यवस्था करने के दावे किये गये, लेकिन सारे दावे खोखले साबित हो गये। ■

2025 में हाथियों की मौत एक नजर में

- **10 मार्च :** हटिया-टाटा रूट पर ट्रेन से कटकर एक हाथी की मौत
- **9 मई :** सरायकेला-खरसावां के कुकड़ू प्रखंड के लेटेमदा स्टेशन के पास ट्रेन से कटकर एक हाथी की मौत।
- **4 व 24 जून :** 20 दिनों में दो हाथियों की नीमडीह में मौत, ग्रामीणों द्वारा खेतों में करंट लगाने से हादसा
- **3 और 5 जुलाई :** सारंडा में अलग-अलग हादसे में तीन हाथियों की मौत, नक्सलियों के बम विस्फोट में हाथियों की मौत के दावे किये गये
- **10 जुलाई :** जगन्नाथपुर के टोंटो थाना क्षेत्र के सिरिंसिया के पालिसाई मास्टर बासा गांव में एक हाथी की मौत
- **18 जुलाई :** बंगाल सीमा के पास ट्रेन से कटकर तीन हाथियों की मौत

कोल्हान में कब-कब हुई हाथियों की मौत

पश्चिमी सिंहभूम

- **29 सितंबर 2017 :** गिधनी रेलवे स्टेशन पर एक हाथी की मौत
- **16 अप्रैल 2018 :** धुतरा और बागडीह स्टेशन के बीच एक हाथी की मौत
- **14 सितंबर 2017 :** बंडामुंडा और किरीबुरु सेक्शन में एक हाथी की मौत
- **4 फरवरी 2021 :** जराईकेला और भालूलता स्टेशन के बीच महीपानी में 2 हाथी की मौत
- **19 मई 2022 :** बांसपानी-जुरुली के बीच एक हाथी की मौत

पूर्वी सिंहभूम

- **2018 :** चाकुलिया के कानीमहुली हॉल्ट और पश्चिम बंगाल के गिधनी स्टेशन के बीच 3 हाथी की मौत
- **2020 :** चाकुलिया के सुनसुनिया के पास एक हाथी की मौत
- **2023 :** मुसाबनी वन क्षेत्र के बेनाशोल में करंट लगने से 5 हाथी की मौत

सरायकेला-खरसावां

- **10 जून 2023 :** नीमडीह प्रखंड के गुंडा विहार में दो माह के हाथी के एक बच्चे की मौत

कौन हाथी ज्यादा साहसी?

■ दयानिधि

एक नए अध्ययन में कहा गया है कि खेतों के पास रहने वाले हाथी घने जंगलों में रहने वाले हाथियों की तुलना में ज्यादा साहसी होते हैं। उनका इस तरह का व्यवहार लोगों और हाथियों के बीच तालमेल बैठाने में अहम भूमिका निभा सकता है। न्यूयार्क के सिटी विश्वविद्यालय के शोध में पाया गया कि थाईलैंड में खेती वाली जमीन के किनारे रहने वाले जंगली हाथी, संरक्षित जंगलों में रहने वाले हाथियों की तुलना में अपरिचित वस्तुओं के सामने आने पर अधिक जिज्ञासु

और खोजबीन करने वाले होते हैं। इस बात का पता लगाते हुए कि अलग-अलग हिस्सों में हाथियों का व्यवहार कैसे बदलता है, यह अध्ययन इस बात की अहम जानकारी प्रदान करता है कि जंगली जानवर लोगों के रहने वाले वातावरण में कैसे ढल जाते हैं और क्यों कुछ अन्य की तुलना में अधिक खतरा उठाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

रॉयल सोसाइटी ओपन साइंस में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक, यह समझना कि कुछ हाथी उन आवासों में मनुष्यों के साथ जुड़ने के लिए खतरे उठाने को अधिक इच्छुक क्यों होते हैं जहां वे भोजन और अन्य संसाधन साझा करते हैं, यह संघर्ष से निपटने के अधिक प्रभावी तरीकों को ढूंढने में मददगार हो सकता है। यह अध्ययन यह जानने के लिए किया गया कि अलग-अलग इलाकों में रहने वाले हाथियों में क्या अंतर होता है। उन हाथियों की विशेषताओं का पता लगाने की कोशिश की गई जो जंगल छोड़कर लोगों के करीब समय बिताने आते हैं, जिससे कई तरह की समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इस अध्ययन में दो अलग-अलग परिस्थितियों में हाथियों की नई वस्तुओं से मवेशियों के ब्रश और आग बुझाने वाले नल के प्रति प्रतिक्रियाओं की तुलना की गई। जहां एक दूर स्थित वन अभयारण्य था और दूसरा खेत से सटा एक भू-भाग था। लोगों के पास रहने वाले हाथियों में वस्तुओं की जांच-पड़ताल करने और उनसे बातचीत करने की संभावना अधिक देखी गई, जिससे शोधकर्ताओं द्वारा "नियोफिलिया" या नएपन के प्रति आकर्षण का बड़ा स्तर देखा गया।

इस तरह का व्यवहार हाथियों को अधिक कैलोरी वाली फसलों, संसाधनों को खोजने में मदद कर सकता है, लेकिन इससे मनुष्यों के साथ खतरनाक मुठभेड़ों का खतरा भी बढ़ जाता है। विकास के चलते हाथियों के आवास छीनने के कारण, वे अक्सर गांवों और खेतों में भोजन की तलाश करते हैं, जिससे स्थानीय लोगों के साथ संघर्ष होता है। अध्ययन में हाथियों की कई वस्तुओं के प्रति प्रतिक्रियाओं की तुलना करके यह भी पता लगाया कि क्या जिज्ञासा और खोजी हाथियों के स्थिरता के लक्षण हैं। लेकिन व्यवहार में एकरूपता के बारे में ठोस निष्कर्ष निकालने के लिए बहुत कम हाथियों ने दोनों वस्तुओं का सामना किया। फिर भी ये निष्कर्ष इस बात की एक प्रभावशाली झलक देते हैं कि वातावरण किस प्रकार पशु व्यवहार को प्रभावित करता है। ये निष्कर्ष बताते हैं कि जिज्ञासा में हर एक अंतर हाथियों को अनुकूल होने में मदद कर सकता है, लेकिन इसकी एक कीमत भी चुकानी पड़ सकती है। यह शोध प्लॉटनिक के पशु संज्ञान और संरक्षण के क्षेत्र में लंबे समय से किए जा रहे शोध पर आधारित है। उनकी प्रयोगशाला का उद्देश्य पशु मन की वैज्ञानिक समझ को एशियाई हाथी जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण के लिए व्यावहारिक उपकरणों में बदलना है। प्रयोगशाला द्वारा किए गए कार्य को हाल ही में सीबीएस के 60 मिनट्स में थाईलैंड में मानव-हाथी संघर्ष पर बनाई गई एक वीडियो के हिस्से में दिखाया गया था। ■

चल चल चल मेरे साथी, मेरे हाथी...

बचपन में हर रविवार को मेरे मोहल्ले में एक हाथी आता था। उस हाथी के साथ चार-पांच गेरुआ वस्त्रधारी होते थे। उनके एक हाथ में कमंडल और दूसरे हाथों में त्रिशुल होता था। हाथी का महावत बड़ा ट्रेंड हुआ करता था। गेरुआ वस्त्रधारी अलख निरंजन कहते और भिक्षा मांगते थे। चूंकि वो हाथी के साथ आते थे, तो उनका एक अलग ही जलवा होता था। हाथी आराम से द्वार-द्वार सूंड़ उठा-उठा कर चावल, आटा, नकद पैसे आदि संग्रहित करता था और सीधे महावत को दे देता था।

■ आनंद सिंह

हाथी के गले में एक बड़ी घंटी होती थी। जब वह चलता था, तब घंटी बजती थी। अक्सर यह टोली दिन के 12 बजे के बाद ही आती थी। मोहल्ले के सारे लोग हाथी देखने अपने-अपने घरों से निकल पड़ते थे। कोई हाथी को प्रणाम करता था, कोई उसकी पूंछ की लंबाई देखता था। हम लोग हाथी की गतिविधियों को देखते थे। निहारते रहते थे कि हाथी कर क्या रहा है। हाथी हर घर जाता। सूंड़ उठा कर इशारा करता-लाओ माई, कुछ दे दो। हमारे मोहल्ले में एक सम्मानित शख्स रहते थे। नाम था चंद्रदेव सिंह। वह ढेर सारा केला का पत्ता, धान की भूसी आदि जमा करके रखते थे। हमारे घर के बगल में ही उनका खेत था। हाथी को इशारा कर खेत में बुलवाते और हाथी 10-15 मिनट में ही केले का पत्ता और भूसी चट कर जाता। जब हाथी वहां से लौटता, तब हम लोग तालियां बजाते। हम लोग बेहद खुश होते थे। फिर हाथी अगले मोहल्ले में चला जाता था।

ऐसी ही स्मृतियां हमारे मानस पटल में आज भी अंकित हैं। आज से 40 साल पहले सर्कस का खूब जोर हुआ करता था। हमारे शहर झुमरीतिलैया में महीनों सर्कस रहता था। सर्कस में हम लोग दो-तीन चीजों को जरूर देखते थे। एक तो जोकर का शो, दूसरा हाथी का शो। हाथी को ट्रेंड कर कभी साइकिल चलवाया जाता था, कभी शराब पिलाकर (नकली) डांस करवाया जाता था तो कभी हाथी से घंटी बजवा कर गणपति की पूजा करवाई जाती थी। सर्कस के हाथी हमारे मोहल्लों में नहीं आते थे लेकिन जब वे अपने भोजन के लिए विश्रामबाग या फिर आश्रम रोड की तरफ आते थे उनके दर्शन हम लोग जरूर कर लेते थे।

हाथी हमारे मानस पटल से कभी ओझल नहीं हुए। बदलते वक्त के साथ कई नियम-कानून आ गये। हाथी को संरक्षण देने की बात चली। सर्कस वालों पर भी कई नियम कानून थोपे गए। हाथी का मस्तमौला स्वभाव धीरे-धीरे हम लोगों की स्मृतियों से ओझल होने लगा। जबसे रेलवे और वन विभाग की लापरवाही से झाड़ग्राम में तीन हाथियों की मौत की खबर पढ़ी, देखी और सुनी, मन बड़ा व्यथित हुआ। हम लोगों के जीवन में जिस हाथी का ज्ञान-विज्ञान से लेकर बुद्धि-विवेक तक का संपर्क रहा, उस हाथी के कट कर मरने की खबर पढ़-सुन कर मन मिजाज खराब ही हुआ। जिस दिन हाथियों के कटने की खबर मिली, उस दिन भोजन करने की इच्छा नहीं हुई। मैं कोई एक्टिविस्ट या पशुओं का कोई बहुत बड़ा प्रेमी नहीं हूं। लेकिन, जिस जानवर को हम लोग बचपन से देखते आए, जिसके बारे में पाठ्यपुस्तकों में पढ़ा, जिस पर एक शादी में बैठने का भी मौका मिला, उससे थोड़ा लगाव तो हो ही जाता है। इसलिए सैकड़ों किलोमीटर दूर घटित इस घटना ने मन को बेचैन कर दिया।

हाथी समझदार प्राणी होते हैं। वह हंसते हैं। रोते हैं। संकेतों को समझते हैं। प्रतिक्रिया देते हैं। बात करते हैं। झुंड में रहने से वो एकता और अनुशासन का खूब पालन करते हैं। वह इंसानों के हितैषी हैं। मित्र हैं। इंसानों पर हमला वह तब करते हैं, जब उनके पास प्रतिरोध का कोई और रास्ता नही बचता है। हाथी समझदार के साथ-साथ वफादार भी होते हैं। हाथी मूलतः प्रेम करने लायक जीव हैं। राजेश खन्ना की फिल्म 'हाथी मेरे साथी' शायद आपने देखी हो। उसमें एक बड़ा ही खूबसूरत गीत है: चल चल मेरे साथी, ओ मेरे हाथी....किशोर कुमार ने इस गीत को गाया है। इस गीत को लोग आज भी सुनते हैं। दरअसल, हाथी ही इंसानों का सही साथी है। वह मर रहा है। हमारी गलतियों से मर रहा है। उसे बचाने की जरूरत है। आपके पास हाथी पालने के लिए धन नहीं है, कोई बात नहीं। जागरुकता तो फैला सकते हैं? यही जागरुकता आज बेहद जरूरी है। हाथी को लेकर लोगों को फिर से जागरुक करना होगा अन्यथा जिस रफ्तार से ये इंसानी गलतियों से मर रहे हैं, कहीं ऐसा न हो कि आने वाली तीन-चार पीढ़ियों के बाद हमें भी हाथी को एक विलुप्तप्राय प्राणियों में शामिल करना पड़े। ■

हिंदी फिल्मों में हाथी

▪ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

बॉलीवुड ने इंसानों और उनके पालतू जानवरों, खासकर विशालकाय मगर दयालु हाथियों के बीच अटूट प्यार का जश्न मनाया है, जो अक्सर अपने मालिकों की जान बचाने के लिए काम आते हैं। बॉलीवुड फिल्मों में जानवरों को हमेशा सकारात्मक रूप में दिखाया गया है। चाहे वह हाथी हो, कुत्ते हों, बिल्लियां हों या घोड़े, वे हमेशा अपने मालिकों के प्रति पूरी वफादारी दिखाते हैं। इंसान-जानवर के रिश्ते पर आधारित बॉलीवुड फिल्में उन सिने प्रेमियों की पसंदीदा फिल्मों में से एक हैं जो पशु प्रेमी भी हैं। इसके अलावा इंसान और हाथी के रिश्तों पर आधारित बॉलीवुड फिल्में अक्सर यह सबक देती हैं कि हाथी जैसे विशाल जानवर का दिल भी सोने का हो सकता है और वह इंसानों से ज्यादा भरोसेमंद हो सकता है। लेकिन, हाल के दिनों में हाथियों पर अत्याचार की खबरें लगातार आ रही हैं। कभी खाल के लिए तो कभी हाथीदांत के लिए हाथियों का शिकार किया जा रहा है। अब तो इंसानी अराजकता इतनी बढ़ गई है कि जो हाथी कभी उनका दोस्त हुआ करता था, अब उसकी भी जान लेने में वो पीछे नहीं। मशहूर गीतकार आनंद बख्शी ने हाथी मेरे साथी में एक गीत लिखा था.... नफ़रत की दुनिया को छोड़ के, प्यार की दुनिया में, खुश रहना मेरे यार, इस झूठकी नगरी को छोड़ के, गाता जा प्यारे, अमर रहे तेरा प्यार, जब जानवर कोई, इनसान को मारे, कहते हैं दुनिया में, वहशी उसे सारे, एक जानवर की जान आज इनसानों ने ली है, चुप क्यूं है संसार, बस आखिरी सुन ले, ये मेल है अपना, बस ख़त्म ऐ साथी, ये खेल है अपना, अब याद में तेरी बीत जाएंगे रो-रो के, जीवन के दिन चार....। इस गीत में आनंद बख्शी जी ने उस दौर में हाथियों, अन्य जानवरों पर हो रहे अत्याचार को लेकर यह गीत लिखा था। तब यह मान लिया गया था कि यह फिल्म लोगों को जागरुक करेगी, हाथियों पर अत्याचार की घटनाओं में गुणात्मक कमी आएगी लेकिन गौर से देखें तो 74 साल बाद हाथियों पर क्रूरता की घटनाएं बढ़ती ही जा रही हैं, बजाए कम होने के। इस लेख में हम उन चंद फिल्मों का जिक्र कर रहे हैं, जिनके मूल में हाथी हैं....

काला पर्वत

सुपरहिट फिल्म काला पर्वत एक विशालकाय हाथी, काला पर्वत, के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपने झुंड और बेटे तूफान के साथ रहता है। वह जंगल में हाथियों के अपने झुंड की देखभाल और रखरखाव करता है। हालाँकि, सूखे के कारण, हाथियों को भोजन और पानी की तलाश में जंगल छोड़ना पड़ता है। वन अधिकारी जंगल में रहने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए सभी हाथियों को पकड़ लेता है, लेकिन काला पर्वत उससे बच निकलने में कामयाब हो जाता है। अंत में काला पर्वत अधिकारी के बेटे के प्यार और दया के आगे झुक जाता है और अधिकारी की देखभाल में अपने झुंड में शामिल हो जाता है। सब कुछ ठीक चल रहा होता है जब तक कि तूफान पागल नहीं हो जाता और गाँव में उत्पात मचाने लगता है। अब, केवल काला पर्वत ही अपने बेटे की देखभाल कर सकता है और गाँव में सभी की रक्षा कर सकता है।

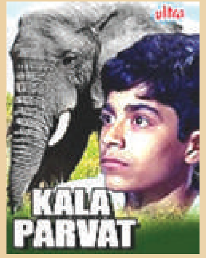

हाथी मेरे साथी

एमए थिरुमुगम द्वारा निर्देशित राजेश खन्ना और तनुजा अभिनीत फिल्म हाथी मेरे साथी मनुष्य और हाथियों के रिश्ते पर आधारित सर्वश्रेष्ठ बॉलीवुड फिल्मों में से एक है। यह फिल्म राजू (राजेश खन्ना) नामक एक युवक की कहानी है, जिसे अपने चार हाथियों से बहुत लगाव है और वह पैसे कमाने के लिए अपने हाथियों के साथ सड़क पर करतब दिखाता है। सब कुछ ठीक चल रहा होता है जब तक कि राजू की शादी नहीं हो जाती और उसकी पत्नी गर्भवती नहीं हो जाती। राजू की पत्नी को अपने घर में चार हाथियों की मौजूदगी से अपने बच्चे के लिए डर लगता है। इसलिए वह राजू से अपने परिवार और हाथियों में से किसी एक को चुनने के लिए कहती है। इस फिल्म का एक दृश्य है, जिसमें चार में से एक हाथी के मरने पर राजेश खन्ना उसे दफनाने ले जाते हैं और अन्य तीन हाथी मृत हाथी पर पुष्पमाला चढ़ाते हैं। यह दृश्य फिल्म का टर्निंग प्वाइंट है और कहना न होगा कि इसी दृश्य ने राजेश खन्ना को बहुत बड़ा सितारा बना दिया।

बालक और जानवर

नानाभाई भट्ट की बालक और जानवर एक साहसिक नाटक है। यह फिल्म एक राजकुमारी के गर्भ से जन्मे एक बालक के इर्द-गिर्द घूमती है। ऐसा माना जाता है कि इस बालक का जन्म एक वृद्ध पुजारी द्वारा जादूगर राजा पर लगाए गए श्राप को पूरा करने के लिए हुआ था। वह अपने राज में प्रजा को बहुत परेशान करता था। सबकी उम्मीदों के मुताबिक, बालक अपने हाथी मित्रों की मदद से दुष्ट जादूगर राजा को मारने का अपना मिशन पूरा करता है और सभी को बचाता है।

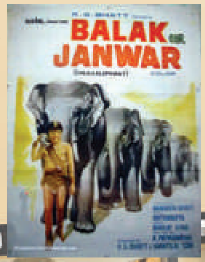

मां

एमए थिरुमुगम की बॉलीवुड पारिवारिक ड्रामा, मां में धर्मेंद्र और हेमा मालिनी मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म विजय नाम के एक युवक की कहानी है, जो अपनी मां के साथ घने जंगलों में एक घर में रहता है। विजय चिड़ियाघरों के लिए जानवरों को पकड़ता है और पैसे कमाने के लिए उन्हें बेच देता है। हालाँकि, उसकी मां उसके काम के खिलाफ है, और उसे कई मौकों पर चेतावनी देती है कि वह माताओं को उनके बच्चों से अलग न करे, लेकिन विजय अपनी मां की सभी चेतावनियों को अनसुना कर देता है। ऐसे ही एक अवसर पर, वह एक हाथी के बच्चे को पकड़ता है और उसे चिड़ियाघर में बेच देता है, लेकिन हथिनी मां के अलगाव को अच्छी तरह से नहीं लेती है और हमला करती है और लगभग विजय की मां को मार देती है। विजय की मरती हुई मां उससे वादा करती है कि वह सभी कपों को उनकी मां से मिला देगा, तभी विजय को अपनी गलती का एहसास होता है।

सफेद हाथी (1977)

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता सफ़ेद हाथी एक बाल फिल्म है जो मानव-पशु संबंधों पर आधारित बॉलीवुड की शीर्ष फिल्मों में से एक है। यह सिबू नाम के एक युवा लड़के और उसकी बहन रानी की कहानी है, जो अनाथ हैं और एक छोटे से गाँव में अपने दुष्ट चाची और चाचा के साथ रहते हैं और अक्सर उनके द्वारा प्रताड़ित किए जाते हैं। सिबू पास के जंगल में एक सफेद जानवर के साथ एक अनोखी दोस्ती विकसित करता है, लेकिन रानी उसे चेतावनी देती है कि वह अपने चाचा और चाची को यह बात न बताए। एक दिन, हाथी सिबू को एक सोने का सिक्का देता है, जिसे उसके लालची चाचा और चाची खोज लेते हैं, जो उस सिक्के की उत्पत्ति के बारे में और जानना चाहते हैं और और सिक्के प्राप्त करना चाहते हैं। हालाँकि, जंगल में सफेद हाथी के बारे में पता चलने से हाथी और सिबू के लिए कई मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं।

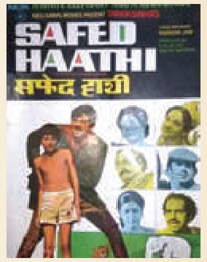

हबारी

शेर जंग सिंह द्वारा निर्देशित, एक्शन-एडवेंचर ड्रामा हबारी में महेंद्र संधू और प्रीति सप्रू मुख्य भूमिकाओं में हैं। हबारी शब्द का संबंध जानवरों की सुरक्षा या निर्दयी शिकारियों से उनकी सुरक्षा से है। यह फिल्म एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो पशु प्रेमी है और जंगली जानवरों को शिकारियों से बचाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है। हालाँकि, जानवरों की रक्षा के अपने अभियान में, उसे कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। खासकर उस खलनायक से जो अपने फायदे के लिए जंगली जानवरों, खासकर विशाल हाथियों का शिकार करता है।

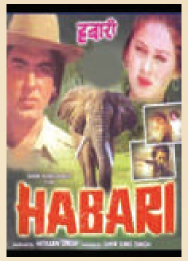

मैं और मेरा हाथी

आर. त्यागराज द्वारा निर्देशित मैं और मेरा हाथी एक एक्शन-एडवेंचर ड्रामा है, जिसमें मिथुन चक्रवर्ती, पूनम ढिल्लों और सुरेश ओबेरॉय मुख्य भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म राम नाम के एक युवक की कहानी है, जिस पर एक हत्या का झूठा आरोप लगाया जाता है, जो उसने की ही नहीं। राम को फंसाने और उसे सलाखों के पीछे डालने की सारी योजना के पीछे एक दुष्ट डाकू, तेजा का हाथ था। राम, तेजा से बदला लेने का फैसला करता है और जेल से बाहर आने के बाद, राम एक हाथी से दोस्ती करता है जो उसे तेजा से बदला लेने में मदद करता है। यह फिल्म हाथी और इंसान के बीच की अटूट दोस्ती को दर्शाती है।

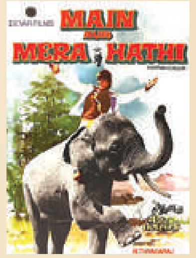

दोस्त

के. मुरली मोहन राव की फ़िल्म दोस्त में मिथुन चक्रवर्ती मुख्य भूमिका में हैं। पात्र का नाम है राजा। राजा एक अनाथ है, जो बड़ा होकर वन अधिकारी बनता है और जंगल में जंगली जानवरों की देखभाल करता है। वह एक हाथी, राम, को बचाता है और उससे दोस्ती करता है। यह मनुष्य और हाथी के रिश्ते पर आधारित बॉलीवुड की शीर्ष फिल्मों में से एक है, क्योंकि यह राजा और राम की समर्पित दोस्ती को दर्शाती है। सब कुछ ठीक चल रहा होता है, लेकिन राजा का सामना दुष्ट पिता-पुत्र, शेर सिंह और नागेंद्र, से होता है, जो शिकारी हैं और अपने लाभ के लिए जानवरों को मारकर अपना जीवन यापन करते हैं।

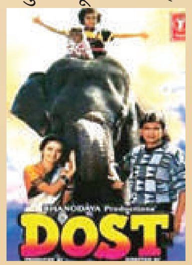

मैं तेरा दुश्मन

जैकी श्रॉफ और जयाप्रदा अभिनीत, विजय रेड्डी की मैं तेरा दुश्मन बॉलीवुड फिल्म का एक और उदाहरण है जो मानव-पशु मित्रता को दर्शाती है। फिल्म किशन नाम के एक ईमानदार वन अधिकारी की कहानी है, जो अपनी पत्नी और बेटे के साथ खुशी-खुशी रहता है। हालाँकि, दुष्ट ठाकुर दयालु और एक भ्रष्ट पुलिस अधिकारी उसे एक ऐसी हत्या के लिए फँसा देते हैं जो उसने कभी की ही नहीं। किशन के जेल जाने के बाद, दोनों उसके परिवार को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करते हैं, लेकिन एक हाथी उनकी मदद के लिए आता है और किशन के लौटने तक उन्हें दुष्टों से बचाता है।

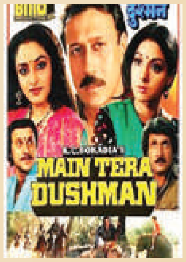

जोड़ीदार

टीएलवी प्रसाद द्वारा निर्देशित 1997 की फंतासी फिल्म, जोड़ीदार में मिथुन चक्रवर्ती और राशि मुख्य भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म गणेश नाम के एक हाथी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपने मालिक की मौत तीन शिकारियों के हाथों होते देखता है, जो अपने फायदे के लिए हाथियों को मारना चाहते थे। बाद में, गणेश की देखभाल एक और मालिक मुन्ना करता है। तभी वह उन तीन लोगों की पहचान करता है जिन्होंने उसके पहले मालिक को मारा था और अपने मालिक की मौत का बदला लेने का फैसला करता है। हालाँकि इस बार वह अकेला नहीं है, बल्कि उसे अपने नए मालिक मुन्ना का साथ भी मिलता है।

जंबो

कोम्पिन केमगुम्निर्ड द्वारा निर्देशित 3-डी कंप्यूटर एनिमेटेड एडवेंचर फिल्म जंबो एक शिशु हाथी जंबो की कहानी है जिसे साहसिक कारनामे करना बहुत पसंद है। हालाँकि ऐसे ही एक साहसिक कार्य के कारण, वह अपने झुंड से बिछड़ जाता है और उन्हें फिर कभी नहीं पाता। जंबो अकेला बढ़ता है और एक युद्ध हाथी बन जाता है। इसके तुरंत बाद जंबो अपने पिता के बारे में और जानने का फैसला करता है। वह अपने पिता का पता लगाने निकल पड़ता है और रास्ते में उसकी मुलाकात एक शाही हाथी से होती है जो बताता है कि कैसे जंबो के पिता एक युद्ध में मारे गए थे। फिर जंबो अपने पिता की मौत का बदला लेने का फैसला करता है।

जंगली

विद्युत जामवाल अभिनीत चक रसेल की एक्शन-एडवेंचर ड्रामा जंगली मानव-पशु संबंधों पर आधारित बॉलीवुड की शीर्ष फिल्मों में से एक है। यह राज नामक एक युवक की कहानी है, जो मुंबई में पशु चिकित्सक है। अपनी मां की दसवीं पुण्यतिथि पर राज अपने पिता के हाथी अभयारण्य में जाता है और उसे पता चलता है कि शिकारियों की वजह से हालात बिगड़ गए हैं, जो हाथियों को उनके दाँतों के लिए मार रहे हैं। राज वहीं रहकर उन हाथियों की रक्षा करने का फैसला करता है जिनकी रक्षा उसके पिता जीवन भर करते आए हैं। हालाँकि, वह दुष्ट शिकारियों और शिकारियों के साथ एक भयानक युद्ध में उलझ जाता है। ■

खामोश हो रही है वनराज की दहाड़

खतरे में है हमारी सांस्कृतिक धरोहर

■ आशुतोष मिश्रा

जैसे-जैसे वन सिकुड़ते हैं, वनराज भोजन की तलाश में गाँवों के नजदीक आते हैं। पालतू पशुओं पर हमले से ग्रामीण असहमत हो जाते हैं, जिससे वनराज को मार दिया जाता है। जून 2025 में अमरेली जिले में पाँच वर्षीय बालक पर शेर के हमले की घटना इसका दर्दनाक उदाहरण है। 2023 में गुजरात में 29 सिंह मानव-वनराज संघर्ष में मारे गए।

प्रकृति की भाषा मौन और गर्जना के बीच बहती है। प्रकृति का मौन कभी चिंतन होती है, कभी चेतावनी। लेकिन जब जंगल का राजा सिंह अपनी गर्जना खो देता है, तो वह मौन सिर्फ पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक त्रासदी का संकेत होता है। भारत वह भूमि है, जहां सिंह गर्जना सदियों से शक्ति, साहस और न्याय की पहचान रही। आज वनराज प्रायः मौन-सा हो गया है। वनराज केवल एक जीव नहीं, बल्कि भारतीय चेतना, संस्कृति और नैतिकता का प्रतीक है। आज वह संकट में है और उसकी दहाड़ हमारे अस्तित्व की पुकार है।

किन संकटों से जूझ रहा है वनराज?

वनराज के सामने संकट अनेक आयामों में फैले हुए हैं जो उसके अस्तित्व को गंभीर खतरे में डाल रहे हैं। प्राकृतिक आवास का विनाशः फारेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया (2023) के अनुसार, भारत में कुल वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है, लेकिन वह जैव विविधता युक्त और घने वन नहीं हैं, जो वनराज के लिए आवश्यक हैं। इसी सर्वे के अनुसार, कुल वन क्षेत्र में वृद्धि हुई तो है, लेकिन वह जैव विविधता युक्त और घने वन नहीं हैं, जो वनराज के लिए आवश्यक हैं। गिर वन का क्षेत्रफल पिछले दशक में लगभग 33.43 वर्ग किलोमीटर घट चुका है। सड़क, रेल, खनन और कृषि विस्तार ने प्राकृतिक आवास को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।

वनराज केवल एक प्राणी नहीं, हमारी संस्कृति, इतिहास और आत्मा का हिस्सा है। इसके संरक्षण में सभी की भागीदारी आवश्यक है। इसके तहत विद्यालयों में 'वनराज चेतना' विषय को पढ़ाया जाना चाहिए। व्यापक वृक्षारोपण के साथ वनारोपण होना चाहिए ताकि सिंहों को आश्रय मिल सके।

मानव-वनराज संघर्ष

जैसे-जैसे वन सिकुड़ते हैं, वनराज भोजन की तलाश में गाँवों के नजदीक आते हैं। पालतू पशुओं पर हमले से ग्रामीण असहमत हो जाते हैं, जिससे वनराज को मार दिया जाता है। जून 2025 में अमरेली जिले में पाँच वर्षीय बालक पर शेर के हमले की घटना इसका दर्दनाक उदाहरण है। 2023 में गुजरात में 29 सिंह मानव-वनराज संघर्ष में मारे गए।

रोग और आनुवंशिक दुर्बलता

सीमित आबादी के कारण आनुवंशिक विविधता कम होने से रोगों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ी है। 2018 में कुकुर डिस्टेंपर वायरस ने गिर वन में 23 शेरों की मृत्यु कराई।

अवैध शिकार और तस्करी

वनराज के अंगों की अवैध तस्करी चीन, वियतनाम, और अन्य देशों में पारंपरिक चिकित्सा के लिए होती है। ट्रैफिक इंडिया रिपोर्ट (2021) में 2010-2020 के बीच 115 से अधिक तस्करी मामले दर्ज हैं। गिर वन में छह शेरों के अवैध शिकार के आरोप में 20 आरोपियों को सजा मिली।

प्रशासनिक और राजनीतिक बाधाएँ

सरकारी संरक्षण प्रयासों के बावजूद भूमि विवाद, नौकरशाही अड़चनें और राजनीतिक मतभेद संरक्षण कार्यों को बाधित कर रहे हैं। गिर वन में बड़ी संख्या में शेर संरक्षित हैं, लेकिन उनका आवास सीमित और मानव बस्तियों के निकट है। वन संरक्षण में असंगति के कारण जंगलों का जैव विविधता युक्त होना कम हो रहा है। वनराज के लिए आवश्यक बड़े, गहरे और स्वच्छंद वनों की कमी सीधे उनकी संख्या पर असर डाल रही है।

हमारे संस्कार और वनराज

शेर भारतीय संस्कृति, धर्म और इतिहास का अभिन्न प्रतीक है। माँ दुर्गा की सिंहवाहिनी शक्ति, न्याय और वीरता का प्रतीक है। अशोक स्तंभ पर सिंह का चित्र भारत की सत्ता और धर्म का द्योतक है। महाभारत, रामायण जैसे प्राचीन ग्रंथों में शेर का उल्लेख वीरता और नेतृत्व के रूप में किया गया है। गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ के अनुयायियों को 'सिंह' उपनाम दिया, जो साहस और समर्पण का परिचायक है। तुलसी दास ने रामचरितमानस में शेर की गर्जना को धर्म की स्थापना का स्वरूप बताया। शेर हमारे संस्कार में, शक्ति के साथ न्याय और नैतिकता का भी प्रतीक है। उसका विलुप्त होना हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास है।

तस्करों और शिकारियों से कैसे बचें सिंहराज?

वनराज की रक्षा के लिए अवैध शिकार और तस्करी से लड़ना अनिवार्य है। कानूनी सख्तीः वन्यजीव संरक्षण अधिनियम को कड़ाई से लागू करना होगा। वन्य अपराध नियंत्रण ब्यूरो को अधिक अधिकार, संसाधन, और प्रशिक्षण देना होगा। ग्राम वन समितियाँ सक्रिय हों, जिससे अवैध गतिविधियों की त्वरित सूचना मिल सके। ड्रोन, सैटेलाइट कैमरा, जीपीएस ट्रैकिंग का व्यापक इस्तेमाल जरूरी है। तस्करों को वैकल्पिक रोजगार और आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाए। मीडिया, शिक्षा और साहित्य के माध्यम से जागरूकता फैलानी होगी। तस्करी रोकने के लिए सीमा पार सहयोग और कड़ी कार्रवाई आवश्यक है।

सरकारी स्तर पर सिंहों को बचाने की योजना कितनी सफलीभूत हुई?

सरकार ने कई महत्त्वाकांक्षी योजनाएँ आरंभ की हैं। इनमें 'प्रोजेक्ट लायन' के तहत 29,277 करोड़ का बजट आवंटित किया गया था। मध्य प्रदेश के कूनो पलपुर अभयारण्य में पुनर्वास योजना शुरु की गई। आनुवंशिक विश्लेषण, स्वास्थ्य देखरेख, आवास विस्तार पर काम हुआ। पशुहानि मुआवजा प्रणाली लागू की गई। वन्य अपराध नियंत्रण ब्यूरो की स्थापना की गई। हालांकि अधिकांश योजनाएँ नौकरशाही की अड़चनों, भूमि विवाद और राजनीतिक मतभेदों की भेंट चढ़ गई हैं। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद पुनर्वास कार्य अधूरा है। सरकारी घोषणाएँ तो सुनाई देती हैं, पर क्रियान्वयन धीमा और अधूरा है।

वनराज का संरक्षण

वनराज केवल एक प्राणी नहीं, हमारी संस्कृति, इतिहास और आत्मा का हिस्सा है। इसके संरक्षण में सभी की भागीदारी आवश्यक है। इसके तहत विद्यालयों में 'वनराज चेतना' विषय को पढ़ाया जाना चाहिए। व्यापक वृक्षारोपण के साथ वनारोपण होना चाहिए ताकि सिंहों को आश्रय मिल सके। ग्रामीणों और युवाओं को संरक्षण से जोड़ने का काम करना चाहिए ताकि वे सिंहों की हत्या को रोक सकें। प्रभावी पशुहानि मुआवजा और सहजीवन नीति बने। मीडिया, साहित्य और कला के माध्यम से जागरूकता फैलाने का काम करना जरूरी है।

फिर गूंजे वनराज की दहाड़

वनराज की दहाड़ के बिना भारत की आत्मा अधूरी है। संरक्षण में हम सबकी सक्रिय भूमिका जरूरी है। जब फिर से गूंजेगी वनराज की दहाड़, तब बहाल होगी भारत की सांस्कृतिक और पारिस्थितिक गरिमा, इसे ध्येय मान कर हम सभी को काम करना होगा। यह कोई एक सरकार के बूते का काम नहीं। सभी देशवासियों को इसके लिए मिशन मोड में काम करना ही होगा। ■

• सैर-सपाटा •

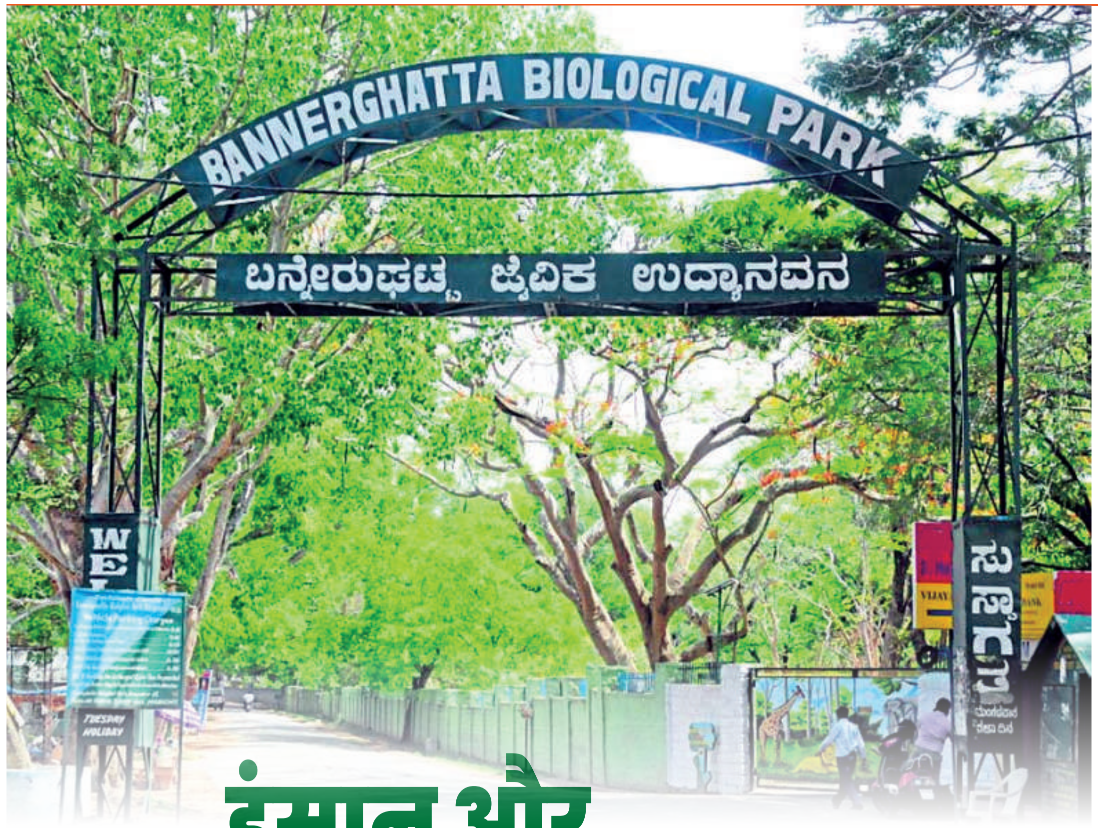

इंसान और वन्यजीव मिल कर रहते हैं बैनरघट्टा बायोलॉजिकल पार्क में

मेरी बेंगलुरु यात्रा में एक प्रमुख केंद्र था बैनरघट्टा बायोलॉजिकल पार्क। इसके बारे में जानने की बेहद पुरानी ललक थी। संयोग ऐसा बना कि बेटी से मिलने गया तो वहां भी गया। वहां प्रकृति के बीच रह कर वन्यजीवों से साक्षात्कार करने का अवसर प्राप्त हुआ।

▪ सुबोध श्रीवास्तव

फोटो क्रेडिट: सुबोध श्रीवास्तव

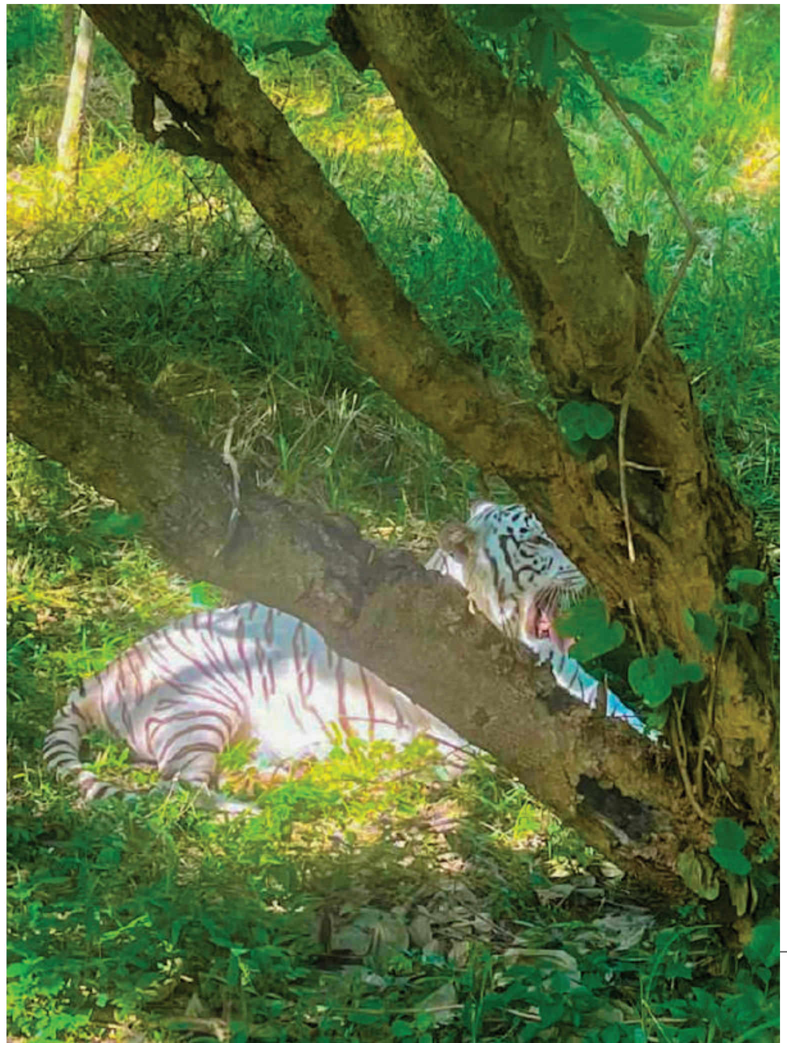

बैनरघट्टा बायोलॉजिकल पार्क, बैनरघट्टा नेशनल पार्क का ही हिस्सा है। यह बेंगलुरु से लगभग 22 किलोमीटर दक्षिण में स्थित एक समृद्ध जैव विविधता वाला क्षेत्र है। यह न केवल पर्यटन और वन्यजीव प्रेमियों के लिए एक आकर्षक केंद्र है, बल्कि एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय संसाधन भी है जो वन्यजीव संरक्षण, पारिस्थितिकीय संतुलन और शैक्षणिक शोध के लिए अत्यंत उपयोगी है। यहां अनेक प्रकार के स्तनधारी, पक्षी एवं अन्य जीव-जंतु पाए जाते हैं। यहां आपको सफेद बाघ और बंगाल टाइगर दोनों ही यहां संरक्षित किये जा रहे हैं। यहां एक विशेष 'लायन सफारी' की व्यवस्था है। आप पर्यटक बस में बैठ जाएं और इत्मीनान से शेरों को खुले में देखें। यह दृश्य मनोहारी होता है। यहां हाथियों की देखभाल के लिए एक विशेष 'एलीफैंट कैंप' भी है। तेंदुआ, भालू, हिरण, गौर, नीलगाय आदि अनेक जानवर यहां आपको मिल जाएंगे। सांपों और मगरमच्छों के लिए विशेष 'रिप्टाइल पार्क' भी है। यहां आप विभिन्न प्रकार के सांपों और मगरमच्छों को देख सकते हैं।

बेंगलुरु जैसे महानगर के पास स्थित होने के कारण यह पार्क एक ग्रीन फेफड़ा की भूमिका निभाता है, जो वायु प्रदूषण को कम करने, जलवायु संतुलन बनाए रखने और जैविक विविधता को संरक्षित करने में मदद करता है। यह पार्क स्कूली बच्चों, शोधार्थियों और प्रकृति प्रेमियों के लिए अध्ययन और शोध का प्रमुख केंद्र है।

यह पार्क पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के मिलनस्थल पर स्थित है, जिससे यह विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों का संगम बनता है। यहां कई दुर्लभ और संकटग्रस्त प्रजातियों का संरक्षण होता है।

बेंगलुरु जैसे महानगर के पास स्थित होने के कारण यह पार्क एक ग्रीन फेफड़ा की भूमिका निभाता है, जो वायु प्रदूषण को कम करने, जलवायु संतुलन बनाए रखने और जैविक विविधता को संरक्षित करने में मदद करता है। यह पार्क स्कूली बच्चों, शोधार्थियों और प्रकृति प्रेमियों के लिए अध्ययन और शोध का प्रमुख केंद्र है। यहां प्रकृति की समझ को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जाते हैं। पार्क में रेस्क्यू सेंटर और पुनर्वास की सुविधा भी है, जहां घायल या शोषण से ग्रसित जानवरों का पुनर्वास किया जाता है। यहां आप विविध प्रजातियों के जानवरों और पक्षियों को संरक्षित रूप में देख सकते हैं। यहां भारत का पहला और अनोखा तितली उद्यान भी है।

दरअसल, बैनरघट्टा बायोलॉजिकल पार्क सिर्फ एक पर्यटक स्थल नहीं, बल्कि एक जीवंत उदाहरण है कि किस प्रकार मनुष्य और प्रकृति सह-अस्तित्व में रह सकते हैं। यह न केवल वन्यजीवों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, बल्कि समाज को प्रकृति के प्रति संवेदनशील और जागरूक बनाने में भी योगदान दे रहा है। ■

मधुमक्खियां पर्यावरण में अहम भूमिका निभाती हैं

झारखंड सरकार मधुमक्खी पालन के लिए सब्सिडी प्रदान करती है। 'मीठी क्रांति' योजना के तहत, सरकार मधुमक्खी पालन के लिए 80% सब्सिडी देती है। इस योजना का उद्देश्य झारखंड में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देना और शहद के उत्पादन को बढ़ाना है।

▪ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

मधुमक्खी एक महत्वपूर्ण और दिलचस्प कीट है। मधुमक्खियाँ (हनीबीज़) न केवल मधु बनाती हैं बल्कि परागण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मधुमक्खियाँ फूलों से नेक्टर इकट्ठा करती हैं और उसे मधु में बदलती हैं। मधुमक्खियाँ फूलों से पराग इकट्ठा करते समय परागण में मदद करती हैं, जो पौधों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मधुमक्खियाँ एक सामाजिक संरचना में रहती हैं जिसमें एक रानी मधुमक्खी, कामगार मधुमक्खियाँ और नर मधुमक्खियाँ होती हैं। मधुमक्खियाँ आपस में नाचकर और फेरोमोन्स के माध्यम से संवाद करती हैं।

मधुमक्खियों का महत्व

पर्यावरण में भूमिका: मधुमक्खियाँ परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे पौधों की वृद्धि और उत्पादन होता है।

मधु और मोम: मधुमक्खियाँ मधु और मोम बनाती हैं, जो मानव उपयोग के लिए मूल्यवान हैं।

संरक्षण: मधुमक्खियों की संख्या में कमी एक चिंता का विषय है। उनके संरक्षण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

मधुमक्खियां पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे कई तरह से पर्यावरण के लिए हितकर हैं। मधुमक्खियां फूलों का परागण करती हैं, जिससे पौधों में फल और बीज बनते हैं। परागण के बिना कई पौधे फल नहीं दे पाते। परागण के माध्यम से मधुमक्खियां पौधों की विविधता को बनाए रखने में मदद करती हैं। मधुमक्खियों द्वारा परागित पौधे अन्य जानवरों के लिए भोजन का स्रोत होते हैं। मधुमक्खियां पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मधुमक्खियों की संख्या में कमी से परागण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। मधुमक्खियों के संरक्षण के लिए कीटनाशकों का सावधानी से उपयोग, आवासों का संरक्षण, और विविध पौधों की उपलब्धता महत्वपूर्ण है।

मधुमक्खी पालन

मधुमक्खी पालन एक पारंपरिक और लाभदायक व्यवसाय है जिसमें मधुमक्खियों को पालकर मधु, मोम और अन्य उत्पाद प्राप्त किए जाते हैं। मधुमक्खी पालन करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं:

मधुमक्खी बक्से: मधुमक्खियों को विशेष बक्सों में रखा जाता है जिन्हें "बीहाइव्स" कहते हैं। ये बक्से मधुमक्खियों के रहने और मधु बनाने के लिए उपयुक्त होते हैं।

मधुमक्खियों की देखभाल: मधुमक्खी पालक मधुमक्खियों की देखभाल करते हैं, जिसमें बक्सों की जांच करना, मधु निकालना, और मधुमक्खियों को कीटों और बीमारियों से बचाना शामिल है।

मधु निकालना: मधुमक्खी पालक समय-समय पर मधु निकालते हैं। मधु निकालने के लिए विशेष तकनीकों का उपयोग किया जाता है ताकि मधुमक्खियों को नुकसान न हो।

मोम और अन्य उत्पाद: मधुमक्खी पालन से मोम, प्रोपोलिस और रॉयल जेली जैसे अन्य उत्पाद भी प्राप्त होते हैं।

मधु उत्पादन: मधुमक्खी पालन से शुद्ध और प्राकृतिक मधु प्राप्त होता है।

परागण में मदद: मधुमक्खी पालन से आसपास के पौधों के परागण में मदद मिलती है।

आवश्यक देखभाल: मधुमक्खी पालन के लिए नियमित देखभाल और ध्यान देना जरूरी है।

मधुमक्खी पालन में खर्चा

मधुमक्खी पालन में खर्चा कई कारकों पर निर्भर करता है। जैसे मधुमक्खी बक्सों की संख्या, स्थान, मधुमक्खियों की देखभाल और मधु निकालने की प्रक्रिया। कुछ सामान्य खर्चे इस प्रकार से हैः

मधुमक्खी बक्से और उपकरण: मधुमक्खी बक्से, सूट, धुआं करने वाला उपकरण और अन्य आवश्यक उपकरणों की लागत।

मधुमक्खी कॉलोनियों की खरीदः नई मधुमक्खी कॉलोनियों को खरीदने का खर्चा।

देखभाल और रखरखाव: मधुमक्खियों की नियमित देखभाल, बक्सों की जांच और मधु निकालने में समय और प्रयास।

कीटों और बीमारियों से बचाव: मधुमक्खियों को कीटों और बीमारियों से बचाने के लिए उपायों का खर्चा।

मधुमक्खी पालन से आय

मधु बिक्री: मधु बेचकर आय प्राप्त होती है।

मोम और अन्य उत्पादः मोम, प्रोपोलिस, और अन्य उत्पाद बेचकर भी आय हो सकती है।

परागण सेवाएं: कुछ मधुमक्खी पालक परागण सेवाएं भी प्रदान करते हैं जिससे आय होती है।

खर्च और आय का संतुलन

मधुमक्खी पालन में खर्च और आय का संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। अच्छी देखभाल और प्रबंधन से मधुमक्खी पालन लाभदायक हो सकता है।

मधुमक्खी पालन कौन कर सकता है

मधुमक्खी पालन कोई भी व्यक्ति कर सकता है जो इसमें रुचि रखता है और आवश्यक ज्ञान और सावधानियां बरतने को तैयार है। कुछ बातें हैं जो मधुमक्खी पालन के लिए महत्वपूर्ण हैं:

रुचि और समर्पण: मधुमक्खी पालन में रुचि और समय देने की इच्छा होनी चाहिए।

ज्ञान और प्रशिक्षण: मधुमक्खी पालन के बारे में जानकारी और प्रशिक्षण प्राप्त करना मददगार होता है।

सुरक्षा उपाय: मधुमक्खियों के साथ काम करते समय सुरक्षा उपाय जैसे कि सूट पहनना और धुआं करने वाला उपकरण उपयोग करना जरूरी है।

स्थान और संसाधनः मधुमक्खी पालन के लिए उपयुक्त स्थान और आवश्यक संसाधन होने चाहिए।

मधुमक्खी पालन शुरु करने से पहले

मधुमक्खी पालन शुरू करने से पहले स्थानीय नियमों और आवश्यकताओं की जांच करना जरूरी है। साथ ही, मधुमक्खी पालन के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना और अनुभव प्राप्त करना मददगार होता है।

झारखंड सरकार और मधुमक्खी पालन के लिए लोन

झारखंड सरकार मधुमक्खी पालन के लिए सब्सिडी प्रदान करती है। 'मीठी क्रांति' योजना के तहत, सरकार मधुमक्खी पालन के लिए 80% सब्सिडी देती है। इस योजना का उद्देश्य झारखंड में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देना और शहद के उत्पादन को बढ़ाना है।

योजना के बारे में

झारखंड में शहद उत्पादन: झारखंड में शहद का उत्पादन बड़ी मात्रा में होता है।

सब्सिडी का लाभ: मधु पालकों को मधुमक्खी पालन के लिए सरकार 80% राशि सब्सिडी के रूप में देती है।

शहद की प्रोसेसिंग: सरकार शहद की प्रोसेसिंग के लिए प्लांट लगाने का आश्वासन देती है।

मधुमक्खी हमला कब करती है

मधुमक्खियां आमतौर पर शांत होती हैं। ये हमला तब करती हैं, जब इन्हें खतरा महसूस होता है या अपने झुंड की सुरक्षा के लिए खतरा देखते हैं। इन मौकों पर मधुमक्खियां हमला कर सकती हैं:

धमकी महसूस होने परः अगर मधुमक्खियाँ खुद को या अपने झुंड को खतरे में महसूस करती हैं तो वे हमला कर सकती हैं।

बक्से या झुंड के पास आने परः अगर कोई मधुमक्खी बक्से या झुंड के बहुत करीब आता है तो मधुमक्खियाँ हमला कर सकती हैं।

उत्तेजित होने परः अगर मधुमक्खियाँ किसी कारण से उत्तेजित हो जाती हैं तो वे हमला कर सकती हैं।

खाद्य स्रोत के पासः कभी-कभी मधुमक्खियां खाद्य स्रोत जैसे कि फूलों या मीठे पदार्थों के पास आक्रामक हो सकती हैं अगर वे खतरा महसूस करती हैं।

हमले से बचाव

दूरी बनाए रखेः मधुमक्खी बक्सों या झुंड से सुरक्षित दूरी बनाए रखना।

शांत रहेः अगर मधुमक्खियों के पास हैं तो शांत रहना और धीरे-धीरे पीछे हटना।

सुरक्षा उपायः मधुमक्खी पालन करते समय सुरक्षा उपाय जैसे कि सूट पहनना और धुआं करने वाला उपकरण उपयोग करना। ▪

संथाल जनजाति की अवधारणा पर आधारित चित्रकला है जादोपटियाः नीलम

नीलम नीरद हैं जादोपटिया पेंटिंग्स की सशक्त हस्ताक्षर

नीलम नीरद रांची में रहती हैं और जादोपटिया पेंटिंग पर लगातार काम कर रही हैं। इंटरनेट के जमाने में जादोपटिया पेंटिंग के बारे में लोगों की जिज्ञासा हाल के दिनों में बढ़ी है। यह संथालों की मिथकीय अवधारणा पर केंद्रित चित्रकला है, जिसकी आधुनिक खोज जाने-माने पत्रकार और लेखक डॉ. आर.के . नीरद ने की। नीलम नीरद से युगांतर प्रकृति के प्रधान संपादक आनंद सिंह की बातचीत के संपादित अंशः-

थोड़ा अपने बारे में आप बताइए...

मेरा नाम नीलम नीरद है। मैं जादोपटिया आर्टिस्ट हूं। झारखंड की शैलियों पर काम करती हूं। मैं दुमका जिले से हूं। मैंने ग्रेजुएशन किया है। फिलहाल फाइन आर्ट्स में कोर्स कर रही हूं और सेकंड ईयर में हूं।

पेंटिंग बनाने का शौक कब से था?

पेंटिंग बनाने का शौक मुझे बचपन से था। पढ़ाई-लिखाई के कारण बीच में मैं इसे नहीं कर पाई। फिर ग्रेजुएशन के बाद जादोपटिया पेंटिंग पर काम करना शुरू किया। सन 2000 से मैं इस पर काम कर रही हूं।

जादोपटिया पेंटिंग क्या है? इसके बारे में विस्तार से बताएं।

जादोपटिया संथाल जनजाति की अवधारणा पर आधारित चित्रकला है और जिसे जादो जाति के खास संथाली लोग बनाते हैं। संथालों की जादो जनजाति है और यह बहुत कम बच गए हैं। लगभग इस जाति के लोग विलुप्त होने की कगार पर हैं।

आप डेली पेंटिंग पर कितना टाइम देती हैं? क्या कोई योजना बना कर काम करती हैं?

मेरा डेली का 6 से 7 घंटा पेंटिंग में हीं जाता है। घर के काम के लिए लोग हैं। खाना तो मैं खुद ही बनाती हूं। फिलहाल मेरा पूरा ध्यान पेंटिंग पर ही है। चित्रकला की दो शैलियों पर काम कर रही हूं। जादोपटिया पेंटिंग को उसके प्रसार और विभिन्न माध्यमों में रूपांकित करने का मैंने काम किया है और इस पर काम कर भी रही हूं। संथाल भित्तीचित्र का पारंपरिक स्वरूप विलुप्त हो रहा है। इसे भी बचाने के लिए मैं काम कर रही हूं। जैसे बिहार की मधुबनी पेंटिंग, झारखंड की सोहराय और कोहबर पेंटिंग, महाराष्ट्र की वार्ली पेंटिंग, मध्य प्रदेश की पिथौरा पेंटिंग... जितनी भी पेंटिंग्स हैं, वह कैनवस से दीवारों पर लाई जा चुकी हैं। संथाल भित्तीचित्र अब तक दीवारों पर ही सीमित थी। मैंने इसे कैनवास पर उतारा है। मैंने इसे कैनवास के अलावा बोर्ड ड्रिप मटेरियल, पीकॉस्टर और सजावट के अन्य सामान जैसे कैलेंडर, बुक कवर, वॉल हैंगिंग में भी रूपांकित किया है। संथाल परगना में संथाल भित्तीचित्र बनाने की विशेष शैली है। इसमें चित्र बनाने के लिए जब दीवार की लिपाई होती है, उसी वक्त कच्ची दीवार पर मिट्टी को उभार कर चित्र को ड्रॉ किया जाता है। इसके बाद दीवार जब सूख जाती है तो किसी लोहे के सामान से उसे उकेरा जाता है। फिर इसमें रंग भरा जाता है। मिट्टी प्राकृतिक स्रोत से ही लिए जाते हैं। जैसे- लाल, काली, पीली

और सफेद मिट्टी ही इसमें इस्तेमाल होती है। बाद में इसमें वाटर कलर का भी इस्तेमाल होने लगा है, हमलोग करने लगे हैं। इस काम को महिलाएं बहुत मेहनत और लगन से करती थीं। जब हम लोग जाते थे तो महिलाओं को इन सारी चीजों पर काम करते हुए देखते थे। मैंने इस पर सर्वे भी किया है। अब नई पीढ़ी के पास समय ही नहीं है तो पारंपरिक विधि लगभग खत्म हो रही है। इसके स्थान पर समतल दीवार पर अब सीधे-सीधे रासायनिक रंग का प्रयोग किया जा रहा है। दूसरी बात, भित्तीचित्र के मिथकीय अवयव जैसे सांप, मरांग बुरू, जाहेररेरा, गाथा यही सारी चीज भित्ति चित्र में दिखाई जाती थी लेकिन अब इंटरनेट के प्रचलन के कारण बहुत सारी चीज आ गई है। संथाल लोगों के घर पर आप देखेंगे कि अब फूल-पत्ती ही एक गमले में बना रहता है। भित्ती चित्र का तो ज्यादातर वही आ रहा है। अब क्या हो रहा है कि फूलों को तरह-तरह से उभारा जाने लगा है। ऐसे तो भित्ती चित्र में मरांग बुरु, जाहिरा आदि बनाना चाहिए। इनलोगों का जो अपना मिथकीय विश्वास है, वह है केकड़ा, मछली, कराम का पौधा, कछुआ, हंस-हंसिनी... यही सारी चीज बननी चाहिए, लेकिन अब फूल वगैरह भी बनने लगे हैं। इसके साथ कोहबर वगैरह की पेंटिंग, सोहराय आदि अब दीवारों पर दिखने लगी है।

बाकी पेंटिंग शैली और जादोपटिया पेंटिंग में क्या अंतर है?

अभी मैं दो पेंटिंग पर काम कर रही हूं। एक भित्ती चित्र पर और दूसरा जादोपटिया। बाकी फाइन आर्ट्स वगैरह हैं। वो सब अलग पेंटिंग की शैलियां हैं। जैसे झारखंड में सोहराय पेंटिंग, महाराष्ट्र में वर्ली पेंटिंग, मध्य प्रदेश में पिथौरा पेंटिंग, बिहार की मधुबनी पेंटिंग हो गयी। इस तरह झारखंड की जादोपटिया पेंटिंग है।

जादोपटिया का बेस क्या है?

यह माइथॉलजी पर आधारित है। इसका पूरा बेस माइथॉलजी ही है।

आपको लगभग 25 साल हो गए इस पेंटिंग को करते हुए। इन 25 वर्षों में आपने कहीं प्रदर्शनी वगैरह लगाई है?

मैंने प्रदर्शनी तो लगाई नहीं है, पर बहुत बहुत सारे प्रदर्शनियों में मैंने भाग लिया है। मैं उसकी एक्टिव पार्ट रही हूं। अभी मुझे भित्ती चित्र पर फेलोशिप मिला हुआ है भारत सरकार की ओर से। जादोपटिया पर हमलोगों की प्रदर्शनी चलती रहती है। 2023 में 10 दिन का प्रोग्राम था> उसमें हम लोगों ने पार्टिसिपेट किया था। फिर रांची में भी आदिवासी महोत्सव में भी भाग लिया था।

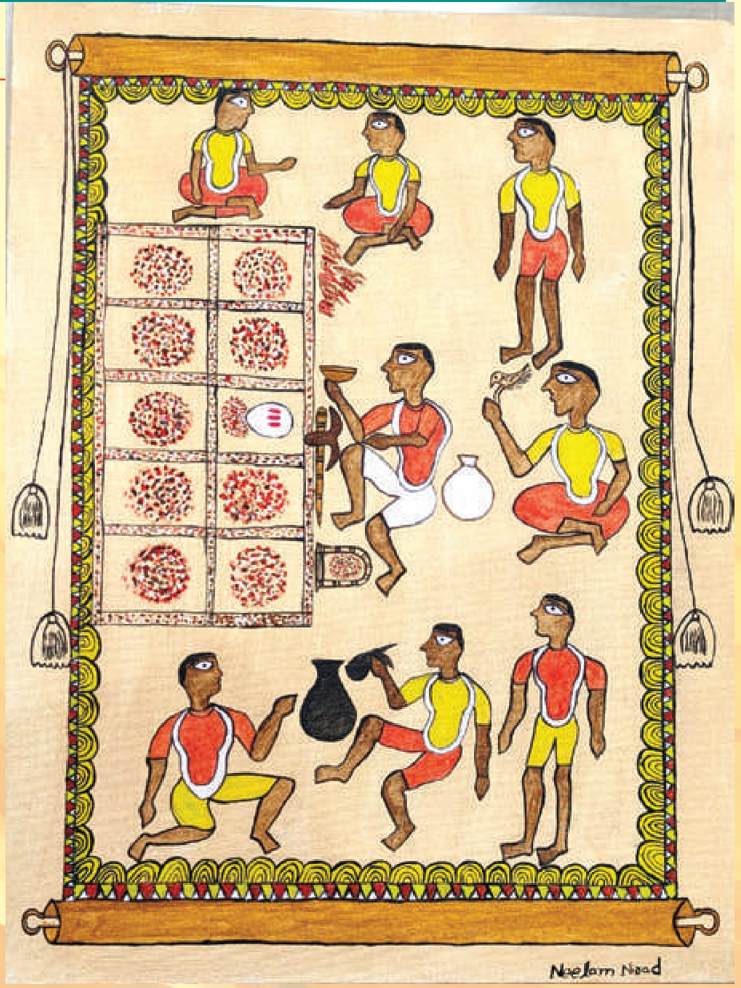

जादोपटिया आपके दिल के काफी करीब है या भित्ती चित्र? दोनों में से कौन सी विधा आपको ज्यादा भाती है?

भित्ती चित्र पर काम तो मैंने दो साल पहले शुरु किया। जादोपटिया तो 2000 से ही है। भित्ती चित्र अभी नया नवेला है। यह सीनियर फैलोशिप जब से मिला है, उसके बाद से थोड़ा ज्यादा करीब रहा है।

जादोपटिया में अभी आप नया क्या बना रही हैं?

जादोपटिया में मैं करामबिनती (यह एक मिथकीय अवधारणा है) बना रही हूं। इसमें जादोपटिया लोगों के घर में अगर किसी की मृत्यु हो जाती है तो जो लोग पेंटिंग बनाते हैं। ये लोग उनके घरों में जाते हैं और छोटे से कागज पर उस व्यक्ति की पेंटिंग बनाते हैं। उसका चेहरा तो बनायेंगे लेकिन उनकी आंखें नहीं बनाते हैं। इसके बाद जिनके घर में यह घटना घटती है, उनके घरवालों से पूछते हैं-जो कुछ भी उस व्यक्ति के बारे में जानते हैं वह बताइए। मैं उनके बारे में पता करके आपको बताऊंगा कि वह आप लोगों के लिए क्या सोचते हैं, क्या करना चाहते हैं। इसके बाद वह लोग चक्षु (आंख) बनाते हैं और फिर उस घर से दान-दक्षिणा लेकर वहां से चले जाते हैं। इसी तरह से यह लोग कमाते-खाते हैं। यह एक प्रकार से अंधविश्वास ही है।

जादोपटिया का इतिहास कितना पुराना है?

जादोपटिया का इतिहास सदियों पुराना है। यह डॉ. आरके नीरद की खोज है। जब वह इस पेंटिंग की खोज कर रहे थे, उस समय जादो जनजाति के लोग बहुत भयभीत रहा करते थे।

25 साल जो आपने मेहनत किया, इन 25 वर्षों में राज्य सरकार की तरफ से कुछ ऐड वगैरह आपको मिला?

कुछ नहीं मिला है, लेकिन अपेक्षा बहुत है। ■

गौर से पढ़िए
युगांतर प्रकृति

हमारे 20 सवालों के जवाब दीजिए
और, पाइए आकर्षक पुरस्कार

पढ़ो और पुरस्कार पाओ (5)

प्रथम पुरस्कार-501 रुपये नकद
द्वितीय पुरस्कार-351 रुपये नकद
तृतीय पुरस्कार-251 रुपये नकद

1. जादोपटिया पेंटिंग की खोज किसने की?
2. अभी जादोपटिया पेंटिंग पर काम कौन कर रहा है?
3. नीलम नीरद कौन हैं?
4. झारखंड में अब तक कितने हाथी मारे गए?
5. हाथियों को किनका वफादार साथी माना जाता है?
6. हाथियों की आईक्यू कैसी होती है?
7. किस ट्रेन से कट कर हाथियों की मौत हुई?
8. हाथियों से संबंधित दुर्घटना किस राज्य में हुई?
9. एक्सीडेंट के वक्त ट्रेन की रफ्तार कितनी थी?
10. वह कौन सा डिवाइस है जो हाथियों की सूचना देता है?
11. भारतीय हाथियों की दो खासियतें क्या हैं?
12. अब देश में कितने शेर रह गये?
13. कौन हाथी ज्यादा साहसी होता है?
14. अमूमन एक हाथी की उम्र कितनी होती है?
15. उस डीएफओ का नाम बताएं जो पांच-पांच जिम्मेदारियां लिये हुए हैं?
16. कोल्हान में 2025 में अब तक कितने हाथियों की मौत हो चुकी है?
17. 2017 से 2023 तक कोल्हान में कितने हाथियों की मौत हुई?
18. क्या झारखंड में एक समर्पित रेस्क्यू दल है?
19. वंतारा क्या है और इसका प्रबंधन कौन करता है?
20. दलमा और सारंडा में अब हाथियों की क्या स्थिति है?

नियम और शर्तें

1. आपको युगांतर प्रकृति का यह अंक बेहद गौर से पढ़ना है।
2. इसी अंक में प्रकाशित विभिन्न लेखों से हम 20 सवाल करेंगे। उन 20 सवालों के जो सही-सही जवाब देंगे, उन्हें नकद पुरस्कार दिया जाएगा।
3. अगर 20 में से 20 सवालों के सही जवाब कई लोग देते हैं तो पुरस्कार उन्हें मिलेगा, जिनका जवाब सबसे पहले आएगा। यानी, जो पहले जवाब देंगे, वो पुरस्कार के हकदार होंगे।
4. जवाब सिर्फ ई-मेल के माध्यम से ही स्वीकार किये जाएंगे। ई-मेल आईडी है yugantarprakriti@gmail.com
5. कृपया अपनी प्रविष्टि के साथ अपना नाम, घर का पूरा पता, मोबाइल नंबर, एक रंगीन फोटो, बैंक खाता अथवा यूपीआई आईडी अथवा क्यूआर कोड अवश्य भेजें।
6. विजेताओं को धनराशि सीधे उनके खाते में भेजी जाएगी और अगले अंक में उनकी तस्वीर के साथ उनके नाम की घोषणा की जाएगी।
7. इस प्रतियोगिता में कोई भी हिस्सा ले सकता है। उम्र, लिंग का कोई बंधन नहीं है।
8. इस प्रतियोगिता में युगांतर प्रकृति परिवार के सदस्य हिस्सा नहीं ले सकते।
9. निर्णायक का फैसला अंतिम और बाध्यकारी होगा। उसे किसी भी सूरत में, कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकती है।

Reaching Out for a Brighter Tomorrow

युगांतर भारती

ने पर्यावरण को जन आंदोलन बना दिया।
इसके लिए युगांतर भारती को बधाई।
वास्तव में इस संस्था ने बढ़िया काम किया है।

-श्री संतोष कुमार गंगवार, मानननीय राज्यपाल, झारखंड

5 जून 2025 को माननीय राज्यपाल महोदय ने बोकारो के तेलमच्चो में युगांतर भारती के बारे में जो बोला, उसके पीछे संघर्ष की लंबी कहानी है। वह संघर्ष हमारा साथी है। उसी संघर्ष की राह पर हमें आगे भी चलना है और हम संघर्ष करेंगे।

जीरो एरर, 100% सटिस्फैक्शन हमारी पहचान है।

युगांतर भारती

भरोसा जीतने का माद्दा